ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

भाद्रपद २०७९ सितम्बर २०२२

भाषा माँ- हिंदी

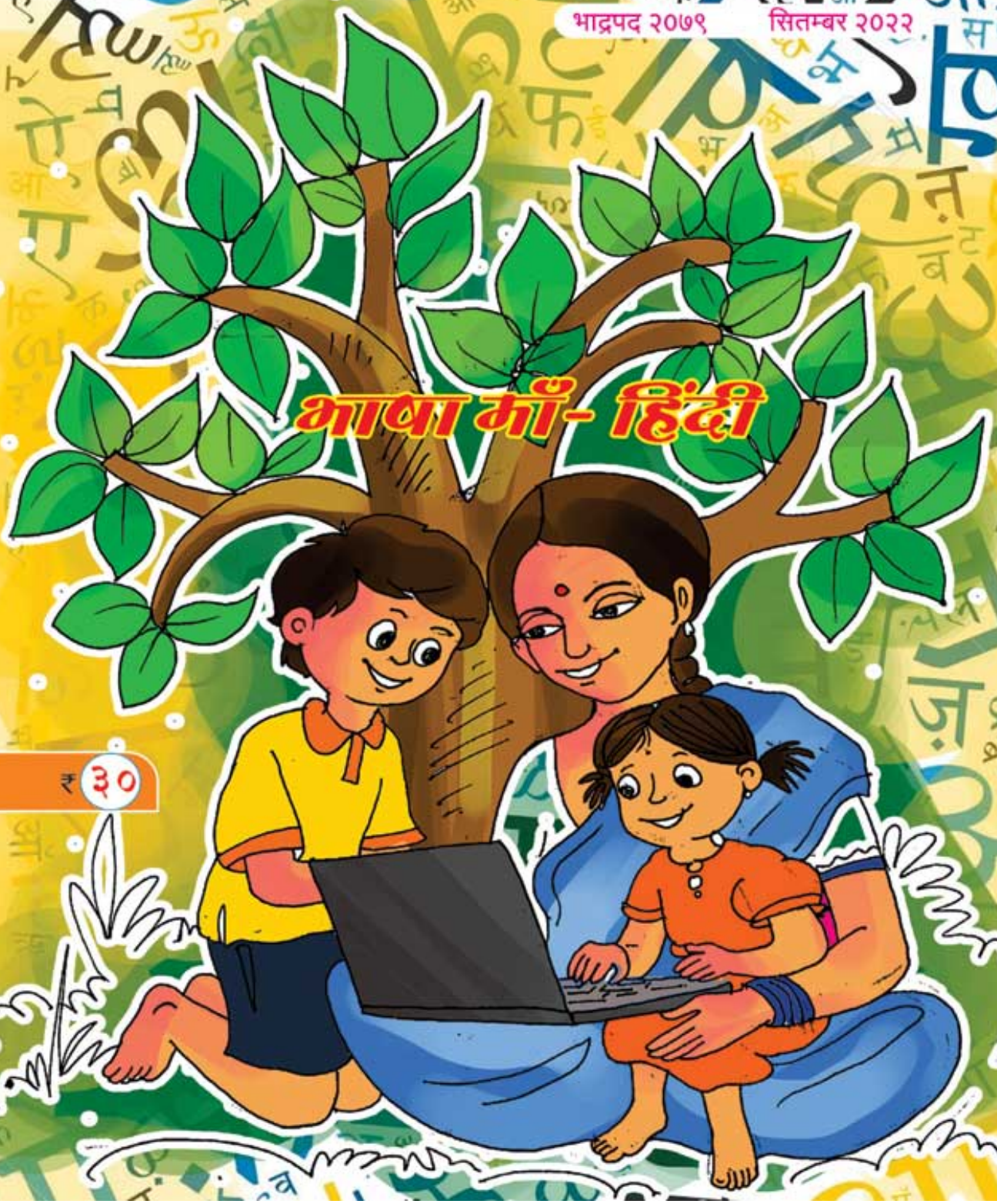

₹ ३०

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

कोरोनाकालीन अवरोध के बाद **'देवपुत्र'** आपके लिए विभिन्न प्रतियोगिता एवं पुरस्कार पुन: आरंभ कर रहा है।

* एक प्रतियोगिता/पुरस्कार के लिए एक ही प्रविष्टि भेजें।
* प्रविष्टि के ऊपर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम एवं अंत में अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाईल नं. एवं रचना का स्वरचित होने का प्रमाण-पत्र अवश्य दीजिए।
* रचनाएँ हिन्दी में हों। हस्तलिखित रचनाएँ डाक से ही 'देवपुत्र' ४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म.प्र.) पर भेजें। टाईप की हुई रचनाएँ इस मेल editordevputra@gmail.com पर भी भेज सकते हैं। हस्तलिखित रचना का फोटो खींचकर मेल न करें।
* प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ३१ जनवरी २०२३ है।
* निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।
* सभी रचनाओं का प्रकाशन अधिकार 'देवपुत्र' का होगा।

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२२

यह प्रतियोगिता **'देवपुत्र'** के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम शंकर भवालकर जी की स्मृति में आयोजित है। प्रतियोगिता केवल बच्चों के लिए है। बच्चे किसी भी विषय पर अपनी स्वयं की बनाई बाल कहानी भेज सकते हैं।

पुरस्कार निम्न प्रकार से हैं-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	११००/-	१०००/-	५००/- ५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२२

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित इस वर्ष यह पुरस्कार जनवरी २०२० से दिसम्बर २०२० के मध्य प्रकाशित **'हिन्दी बाल कहानी की पुस्तक'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कृत कृति को प्रमाण-पत्र सहित ५०००/- पुरस्कार निधि प्रदान की जाएगी। प्रविष्टि हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२२

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित यह पुरस्कार इस वर्ष **'महिला क्रांतिकारी के प्रसंग'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कार होंगे-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	१२००/-	१०००/-	५००/- ५००/-

केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२२

वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री रमेश जी गुप्ता द्वारा उनके पूज्य माता-पिता की स्मृति में स्थापित 'केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२२' देवपुत्र के पुस्तक परिचय स्तंभ में प्रकाशित बाल साहित्य की किसी एक श्रेष्ठ कृति पर प्रदान किया जाता है। जनवरी २०२२ से दिसम्बर २०२२ तक प्रकाशित पुस्तक का चयन कर निर्णायक द्वारा घोषित किया जाएगा।

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

भाद्रपद २०७९ ▪ वर्ष ४३
सितम्बर २०२२ ▪ अंक ०३

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

बाल साहित्य में एक मुहावरा–सा प्रचलित है कि बच्चों का साहित्य बच्चों की भाषा में होना चाहिए। बात शत प्रतिशत सही है, व्यावहारिक है। बल्कि बच्चे ही क्या संसार के समस्त जीव अपनी ही भाषा में बात करना श्रेष्ठ मानते हैं। रामचरित मानस का प्रसंग है कि गरुड़ जी शंकर जी को रास्ते में मिले। बोले– ''मुझे राम कथा का रहस्य बताइए।'' शंकरजी ने उन्हें मानसरोवर भेज दिया बोले– ''वहाँ कागभुशुण्डि जी नित्य रामकथा कहते हैं आप वहाँ जाओ।'' ''क्यों?'' बोले– **''समुझइ खग खगही कै भाषा।''** पक्षी को पक्षी की बात सरलता से समझ आ जाएगी। यह है अपनी भाषा का महत्व।

लेकिन बच्चों की भाषा यानि कौन–सी भाषा? क्या आजकल जो चल रही है वह खिचड़ी भाषा या हिंग्लिश बच्चों की भाषा है? विचार करेंगे तो ध्यान आएगा 'यह तो हमारी आपकी भाषा नहीं थी।' यह तो हमें समाचार–पत्रों, एवं अन्य संचार माध्यमों ने दुहरा–दुहरा कर जबरदस्ती सिखाई है। या कहें हमारे मन–मस्तिष्क व मुख में ठूँस दी है। मैं पूछूँ उच्चारण की दृष्टि से 'स्कूल' बोलना व लिखना सरल है या 'शाला'? शाला लिखना–बोलना सरल है न? फिर 'स्कूल' बोलना क्यों शुरू हुआ। 'संस्कृत' कठिन है यह कहकर छूटती गई और अँग्रेजी के कठिन उच्चारण वाले शब्द भी बलात याद करवाए गए। क्या आपकी **नानी, दादी की भाषा जिसमें बाल साहित्य की गंगोत्री गोद में बैठी है** ऐसी ही थी? मैं जानबूझकर माता–पिता की बात नहीं कहता, क्योंकि आप बच्चों के माता–पिता भी प्राय: इसी खिचड़ी भाषा के प्रभाव में हैं। चिंता का विषय यह है कि जब हम पराधीन थे, तब हमारे पूर्वजों ने जिस भाषा को सुरक्षित रखने के उपाय किए, उसे हम स्वतंत्र राष्ट्र के लोग भूलते जा रहे हैं। मन पर विदेशी भाषा का लबादा ओढ़े, हम अपनी भाषाओं का दम घोट रहे हैं। आपको अपने लिए साहित्य, अपनी भाषा में चाहिए, पर जो वास्तव में अपनी है, उस भाषा में। **स्वभाषा का गौरव स्वतंत्र राष्ट्र की महत्वपूर्ण पहचान है इसकी रक्षा हमें ही करना है।**

अनेक भाषाओं, बोलियों से समृद्ध अपने विशाल राष्ट्र की भाषा–भारती आपके कंठ में विराजने, हृदय में बसने और मस्तिष्क में संचरित होने को व्याकुल है। आप ही भविष्य हैं इन भाषाओं के भी, इसलिए इन्हें कभी भूलिए मत।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- सब उन्नति को मूल -नीलम राकेश ०९
- खेल खेल में हिन्दी -पद्मा चौगाँवकर १२
- हिन्दी है महतारी -राजा चौरसिया २४
- चिंकी के दोस्त -नीनासिंह सोलंकी २८
- दादाजी हिन्दी अनुरागी -केसरीप्रसाद पाण्डेय 'बृहद' ३८
- अभी नहीं -दिनेशप्रताप सिंह 'चित्रेश' ४४

व्यंग्य

- हिन्दी को फूल की उपाधि -नीलू सोनी ४२

लघु आलेख

- विनोबा और नागरी -प्रभुलाल चौधरी २०

एकांकी

- निज भाषा उन्नति -अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' ०५

चित्रकथा

- शोर करना मना है -देवांशु वत्स १५
- अनूठा उपहार -देवांशु वत्स ३१
- शिकायत -संकेत गोस्वामी ३७
- मोर की सुन्दरता -राजेश गुजर ४०

कविता

- बंदर मामा का कम्प्यूटर -वेदमित्र शुक्ल ०८
- कभी कभी -पेन्टर मदन १४
- बूँदें पानी की -अश्वनी कुमार पाठक २३
- आलू भैया -डॉ. लता अग्रवाल ४६
- धूप धरा पर -धीरेन्द्र द्विवेदी ४९
- सरदार भगतसिंह -प्रो. श्रीकृष्ण 'सरल' ५०
- शिक्षक -सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा' ५१

स्तंभ

- बालसाहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' १६
- शिशु गीत -चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक' २१
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान २२
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी २७
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३२
- आपकी पाती ३३
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल ३४
- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी ४३
- छ: अंगुल मुस्कान ४६
- पुस्तक परिचय ४८

जानकारी

- शब्दों का अनूठा संसार -ललितनारायण उपाध्याय ११
- यतीन्द्रनाथ दास ५०

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स १०
- शब्द चित्र -राजेश गुजर ३६
- खेलो खेल -संकेत गोस्वामी ४७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

निज भाषा उन्नति

– अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

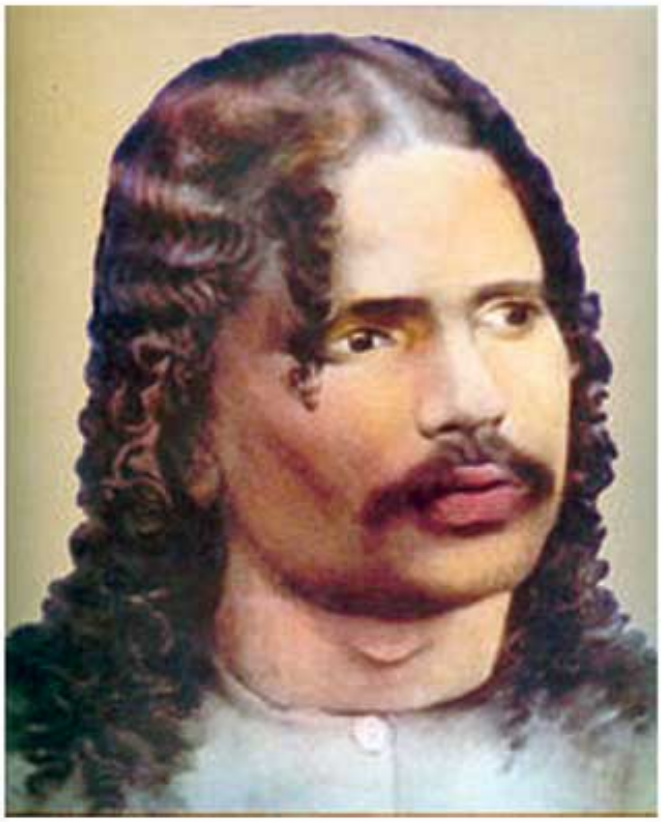

दृश्य– विद्यालय की एक कक्षा का दृश्य। कक्षा में छात्र, छात्रायें बैठे हैं। अध्यापक का प्रवेश होता है। अध्यापक के एक हाथ में उपस्थिति पंजिका तथा दूसरे हाथ में एक गोल मोड़ा हुआ दिनदर्शक (कैलेण्डर) है जिस पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की तस्वीर बनी हुई है। अध्यापक के आते ही सारे छात्र खड़े हो जाते हैं। अध्यापक हाथ के संकेत से छात्रों को बैठने के लिए कहते हैं, गोलाई में लिपटा दिनदर्शक मेज पर रखते हैं और उपस्थिति पंजिका खोलकर छात्रों की उपस्थिति लेते हैं। उपस्थिति लेने के बाद अध्यापक श्यामपट पर खड़िया से लिखते हैं 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र'।

अध्यापक– ''बच्चो! अभी मैंने तुम्हारे सामने श्यामपट पर देश के एक महान व्यक्ति का नाम लिखा है। क्या तुम लोग इनके बारे में जानते हो?''

अपूर्व– ''जी गुरुजी! हरिश्चन्द्र एक सत्यवादी राजा थे जो कभी भी झूठ नहीं बोलते थे। मेरी दादीजी ने मुझे इनकी कहानी सुनाई थी।''

अध्यापक– ''अपूर्व! तुमने ध्यान से नहीं पढ़ा। मैंने श्यामपट पर 'राजा हरिश्चन्द्र' नहीं 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' लिखा है। ये दूसरे महापुरुष हैं।''

(इतना कहने के बाद अध्यापक मेज पर लपेटकर रखा कैलेण्डर खोलते हैं और उसको श्यामपट के बगल में एक कील में लटका देते हैं।)

अध्यापक– ''देखो बच्चो! मैंने जिस महापुरुष का नाम लिखा है यह उनका चित्र है।''

तारा– ''इन महापुरुष ने कौन–सा महान कार्य किया है गुरुजी?''

अध्यापक– ''बताता हूँ! पहले तो तुम लोग यह जानो कि आज के दिन मैं इन महापुरुष के बारे में क्यों बात कर रहा हूँ। बच्चो! आज की तिथि है ०९ सितम्बर। आज ही के दिन वाराणसी के एक सम्पन्न वैश्य परिवार में जन्म हुआ था इन महापुरुष का। ये वो महापुरुष हैं जिन्होंने हिन्दी भाषा का वर्तमान स्वरूप गढ़ा था। आज हम लोग जो हिन्दी बोलते और लिखते हैं उसको निर्मित तथा स्थापित करने का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को ही जाता है।''

पवन– ''गुरुजी! तो क्या इनसे पहले हिन्दी भाषा थी ही नहीं? अगर ऐसा था तो फिर लोग आपस में बातचीत कैसे किया करते थे?''

अध्यापक– ''ऐसी बात नहीं है पवन! भाषा थी और लोग आपस में बातचीत भी किया करते थे। लेकिन कोई एक ऐसी सर्वनिष्ठ भाषा नहीं थी जिसे हर कोई लिखे, बोले और समझे। देखो, हमारे भारत देश के बारे में एक कहावत कही जाती है कि–

'कोस–कोस पर बदले पानी,
चार कोस पर बदले वाणी।'

इसका अर्थ यह है कि हमारा देश इतना विविधता भरा है जहाँ हर एक कोस की दूरी के बाद पानी के गुण और स्वाद में कुछ बदलाव आ जाता है और हर चार कोस के बाद भाषा में बदलाव आ जाता है।''

नमन– ''कोस का अर्थ क्या होता है गुरुजी?''

अध्यापक– ''यह तुमने अच्छा प्रश्न किया। कोस दूरी का मापने का हमारे देश का पुराना पैमाना है। एक कोस आज के लगभग तीन किलोमीटर के बराबर होता है।''

हर्षित– ''गुरुजी! यदि हर थोड़ी दूरी के बाद भाषा बदल जाती होगी तब तो लोग एक दूसरे की भाषा ही नहीं समझ पाते होंगे?''

अध्यापक– ''अरे रे! ऐसी बात नहीं है जैसा तुम समझ रहे हो। मूल भाषा तो सभी की हिन्दी ही है। होता यह है कि स्थान बदलने के साथ प्रचलित बोली में क्षेत्रीय शब्दों और बोलने के ढ़ंग में थोड़ा सा अंतर आ जाता है। जानते हो हिन्दी के ही अंदर अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा, बुन्देली, बघेली, राजस्थानी, मालवी, मैथिली, मगही, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी आदि अठारह भाषा–बोलियाँ प्रचलित हैं।''

कोमल– ''तो क्या भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने इन सभी को मिलाकर एक कर दिया था?''

अध्यापक– ''नहीं, ऐसी बात नहीं है। क्षेत्रीय भाषाएँ अपने मूल स्वरूप में आज भी विद्यमान हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने उस सभी में सामंजस्य स्थापित करते हुए लिखने–पढ़ने और बोलने के लिए एक मानक साहित्यिक हिन्दी का विकास किया था जिसे **खड़ी हिन्दी** के नाम से जाना जाता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का कहना था कि–

'निजभाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।'

यानि कि आपनी मातृभाषा की उन्नति के बिना समाज और देश की उन्नति संभव नहीं है।''

नवीन– ''मातृ भाषा किसे कहते हैं गुरुजी?''

अध्यापक– ''बेटा! मातृभाषा का मतलब है अपने घर, परिवार में बोली जाने वाली भाषा। वह भाषा जिसे हम जन्म लेने के साथ ही सुनते हैं, बोलते हैं और जिसके माध्यम से सीखते हैं, हमारी मातृभाषा

होती है। वैसे बोलने के लिए तो हमारे समाज में अंग्रेजी भी बोली जाती है लेकिन वह विदेशी भाषा है। हमारी मातृभाषा हिन्दी है। भारतेन्दु हरिचन्द्र जी का कहना है था कि जब हमारी मातृभाषा विकसित होगी तभी हमारा आपसी संवाद ठीक ढ़ंग से संभव हो सकेगा और तभी आपसी ताल–मेल से हम अच्छे से समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे।''

अल्पना– ''फिर तो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी बहुत दूरदर्शी और व्यापक सोच वाले व्यक्ति थे।

अध्यापक– ''हाँ बच्चो! भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

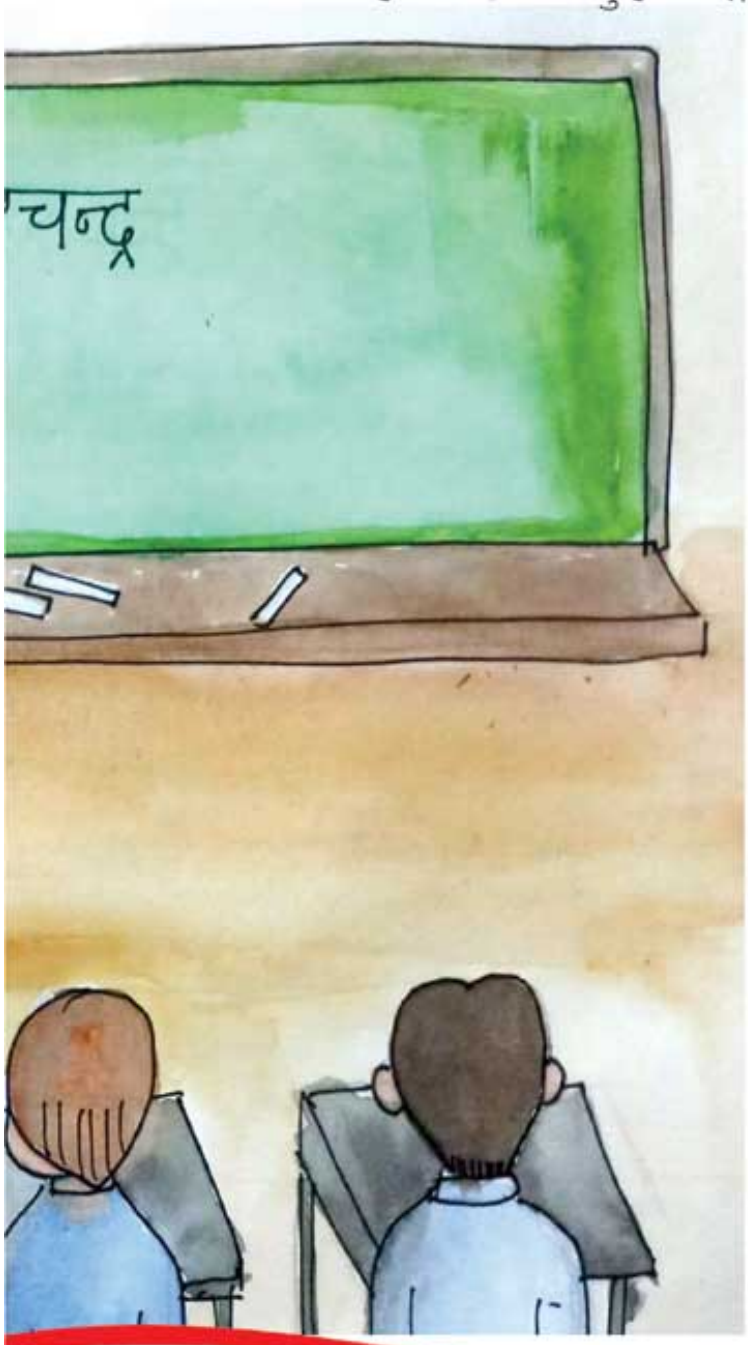

जी बहुत दूरदर्शी और हिन्दी के उत्थान के लिए समर्पित व्यक्ति थे। लेकिन दुर्भाग्यवश ०९ सितम्बर १८५० में जन्में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का निधन मात्र ३५ वर्ष की आयु में ही ०६ जनवरी १८८५ ई. को हो गया था। इस अल्पायु में ही उन्होंने हिन्दी भाषा की स्थापना एवं प्रचार–प्रसार के लिए इतने महत्वपूर्ण कार्य कर दिए हैं जो मील के पत्थर समान हैं।''

अमोल– ''इसका अर्थ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने बहुत कम आयु में ही लिखना प्रारम्भ कर दिया होगा।''

अध्यापक– ''हाँ बच्चो! भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने बचपन से ही साहित्य साधना प्रारम्भ कर दी थी। लेकिन उनका बचपन बहुत कष्टमय रहा। वे जब मात्र पाँच वर्ष के थे तभी उनकी माताजी की मृत्यु हो गई थी। उनके पिता ने दूसरी शादी की। विमाता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी को बहुत कष्ट दिया करती थी। दस वर्ष की आयु में उनके पिता का भी देहांत हो गया था। इन विपरीत परिस्थितियों के बाद भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने हिन्दी के लिए जो कर दिया वह अतुल्य है।''

अपूर्व– ''तो क्या भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी कोई अध्यापक थे? उन्होंने लोगों को हिन्दी पढ़ना–लिखना सिखलाया था?''

अध्यापक– ''नहीं, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी अध्यापक नहीं एक महान रचनाकार थे। स्वाध्याय के बल पर उन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी, बांग्ला, गुजराती, पंजाबी और उर्दू आदि भाषायें सीखी थीं। लेकिन अपनी मातृभाषा हिन्दी के लिए उनके अंदर अगाध प्रेम था। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से एक स्तरीय हिन्दी का निर्माण किया और शुद्ध हिन्दी बोलने, लिखने के लिए लोगों को जाग्रत किया।''

नवीन– इसका अर्थ है भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी लेखक थे?''

अध्यापक– ''हाँ बच्चो! भारतेन्दु

हरिश्चन्द्रजी एक कवि, लेखक और पत्रकार थे। उनका सपना हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार करना था। इसके लिए उन्होंने अपने निजी प्रयासों से सन् १८६८ में **'कवि वचन सुधा'** नामक पत्रिका, सन् १८७३ में **'हरिश्चंद्रिका'** नामक पत्रिका तथा बालिकाओं के लिए वर्ष १८७४ में **'बालाबोधिनी'** पत्रिका का प्रकाशन किया था। पहले समाज में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या बहुत कम होती थी। ऐसे लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए उन्होंने नाटकों की रचना की। हिन्दी में नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी से ही माना जाता है। इसके अलावा उन्होंने कई काव्य ग्रन्थ लिखे। देश और समाज की स्थिति पर कई विचारोत्तेजक निबंध लिखे तथा दूसरी भाषाओं के उपयोगी साहित्य का हिन्दी में अनुवाद भी किया था।''

प्रतिमा- ''गुरुजी! क्या इनका वास्तविक नाम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही था?''

अध्यापक- ''नहीं, इनका मूल नाम हरिश्चन्द्र था। हिन्दी भाषा तथा देश के लिए इनकी सेवाओं को देख कर काशी के विद्वानों ने इनको 'भारतेन्दु' की उपाधि दी थी।''

अमोल- ''गुरुजी! ऐसे महापुरुष का तो हमें आभारी होना चाहिए।''

अध्यापक- ''हाँ बच्चो! हिन्दी भाषा तथा समाज पर इनके बहुत उपकार हैं। इनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अपनी मातृभाषा हिन्दी से प्रेम करें और अपने दैनंदिन कार्यों में हिन्दी का ही प्रयोग करें।''

सारे बच्चे- ''हम ऐसा ही करेंगे गुरुजी!''

(मंच पर धीरे-धीरे अँधेरा हो जाता है।)

- लखनऊ (उ. प्र.)

कविता

बंदर मामा का कम्प्यूटर

- वेदमित्र शुक्ल

बंदर मामा लेकर आये, एक नया कम्प्यूटर,
इंटरनेट भी लगवाया, कम्प्यूटर के अंदर।
खटपट-खटपट टाईप करके
सबको भेजें मेल,
तरह-तरह के वीडियो गेम
खेलें ढेरों खेल।
छोड़ दिया पढ़ना अखबार, पढ़ते अब ई-पेपर,
पेड़ बचायेंगे जंगल के, कागज खूब बचाकर।
बंदर मामा का कम्प्यूटर
जब से जंगल आया,
जंगल में मंगल ही मंगल
सभी ओर है छाया।

- नई दिल्ली

कहानी

सब उन्नति को मूल

– नीलम राकेश

नटखट, चुलबुली, पंखुड़ी अब कक्षा सात में आ गई है। वह स्वयं को बहुत बड़ा मानने लगी है। कोई उसे बच्चा कहता है तो उसे बुरा लगता। स्वयं को बड़ा सिद्ध करने के लिए वह बहुत से कामों में माँ का हाथ बँटाने का प्रयत्न करती है। उसकी माँ उसकी भावना को समझती है। इसलिए छोटे-छोटे कामों की जिम्मेदारी उसे दे देती हैं और पूरा होने पर उसकी बहुत प्रशंसा भी करती हैं। पंखुड़ी, फूल-सी खिल जाती है।

आज पंखुड़ी शाला से लौटी तो किसी विचार में खो हुई थी। उसका चुलबुलापन गायब था। वह खाना खाने भी चुपचाप बैठ गई।

''पंखुड़ी! क्या बात है आज बहुत चुप-चुप हो?'' पंखुड़ी की प्लेट में चपाती डालते हुए माँ ने पूछा।

''हाँ, माँ! आज शाला में एक अजीब-सी बात हुई।''

आश्चर्य माँ के चेहरे पर फैल गया और थोड़ी चिंता भी, ''क्या हुआ बेटी? पूरी बात बताओ।''

''पता नहीं कैसे? आज अचानक कक्षा में इस बात की चर्चा होने लगी की हिंदी अधिक महत्वपूर्ण है या अँग्रेजी?'' खाते-खाते पंखुड़ी ने कहा।

''अरे! दोनों का अपना-अपना महत्व है।'' माँ चौंक कर बोलीं।

''सही है आपकी बात माँ! लेकिन वहाँ चर्चा से अधिक झगड़ा होने लगा। हम लोग लगभग दो दलों में बँट गए थे। मैं और मेरी तीन सहेलियाँ, हिंदी के पक्ष में बोल रहे थे और बाकी पूरी कक्षा, अँग्रेजी के पक्ष में थी।''

''फिर क्या हुआ?''

''कुछ नहीं फिर हमारी शिक्षिका आ गईं। एक लम्बा-चौड़ा भाषण दिया और फिर 'मातृभाषा हिंदी'

पर निबंध लिखकर लाने का गृहकार्य दे दिया।''

माँ प्रसन्न होकर बोलीं- ''यह तुम्हारी शिक्षिका ने बहुत अच्छा किया।''

''अरे माँ! आप तो कुछ समझ ही नहीं रहीं।'' पंखुड़ी ने ऐसे मुँह बनाया, जैसे माँ ने कोई बहुत ही बचकानी बात कह दी हो।

माँ ने हँसकर पूछा, ''क्यों जी! क्या नहीं समझे हम?''

''अरे माँ! अब ये मेरी जिम्मेदारी हो गई ना कि मैं बहुत ही दमदार निबंध लिखकर ले जाऊँ। आप मेरी सहायता करेंगी न?'' पंखुड़ी के स्वर में आग्रह था।

''सबसे पहले तो तुम यह बात अपने दिमाग से निकाल दो कि तुम यह निबंध आज की इस लड़ाई को जीतने के लिए लिख रही हो।''

''.....'' पंखुड़ी आश्चर्य से माँ को देख रही थी।

''अपने आप से पूछो कि तुम हिंदी के लिए क्या अनुभव करती हो? अपने उस भाव को शब्द दो। फिर देखना तुम्हारा निबंध सबसे अच्छा होगा।''

''माँ! मुझे हिंदी से बहुत लगाव है। गर्व है मुझे अपनी भाषा पर और यह बात आप जानती हैं।'' पंखुड़ी बोली।

''जानती हूँ। और मुझे भी इस बात पर गर्व है कि मेरी बेटी को हिंदी भाषा पर गर्व है और वह हिंदी में बहुत अच्छा लिखती भी है। लेकिन एक बात स्मरण रखना। अपनी मातृभाषा पर गर्व करना अच्छी बात है। लेकिन बाकी सभी भाषाओं के लिए भी मन में आदर होना चाहिए। हर भाषा का अपना महत्व होता है।''

''.....'' पंखुड़ी ने सहमति में सिर हिलाया।

''याद रखना पंखुड़ी! किसी भी देश की प्रगति का आधार। उसकी भाषा और उसकी संस्कृति होती है। तुम्हें हिंदी पर लिखना है तो स्मरण करा दूँ महान भाषाविद् ग्रियर्सन ने हिंदी के लिए कहा था, ''हिंदी बोलचाल की महाभाषा है।''

''धन्यवाद माँ! आपने मुझे आरंभ का सूत्र दे दिया और बीच में हिंदी के प्रति अपने अनुराग और सम्मान को मैं शब्द दूँगी। मैं यह भी बताऊँगी कि हिंदी से हमें क्या-क्या लाभ होता है। फिर मैं अपने निबंध का अंत भारतेंदु हरिश्चन्द्र के शब्दों से करूँगी।''

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के,
मिटत न हिय को शूल।

''यह है न मेरी बिटिया जैसी बात। अब तुम अच्छा-सा निबंध लिखो और मुझे दिखाओ।'' प्रसन्न होकर माँ बोलीं।

मेज पर से झूठे बर्तन उठाते हुए पंखुड़ी बोली- ''अब देखिएगा आप! मैं कैसे हिंदी को हर भारतीय के माथे की बिंदी बनाकर आपको दिखाती हूँ।''

माँ ने स्नेह से बिटिया को देखा और बर्तन उठाने में उसकी सहायता करने लगीं।

- लखनऊ (उ. प्र.)

बढ़ता क्रम 11

देवांशु वत्स

1. 'है' का भूतकाल।
2. धरोहर, जमा-पूंजी।
3. छोटी नाव, डोंगी।
4. थाने का एक अधिकारी।
5. अनुमान लगाना।
6. लाभ-हानि के अनुसार पक्ष बदलने वाला।

1.	था					
2.	था					
3.	था					
4.	था					
5.	था					
6.	था					

उत्तर: 1. थी, 2. थाती, 3. थुथरी, 4. थानेदार, 5. थाह लगाना, 6. थाली का बैंगन।

शब्दों का अनूठा संसार

– ललितनारायण उपाध्याय

आइए, आज आपको ले चलें 'शब्दों' के अनूठे संसार में। शब्द, जिनसे आप परिचित तो थे ही पर उन अर्थों में नहीं जिसमें हम आपको परिचित कराने जा रहे हैं।

आप स्लेट, मास्टर, रेल, कॉलेज, स्कूल, स्टेशन, फीस, टिकट, कमीशन, एजेंट, रजिस्टर, फुटस्केल, डॉक्टर, लालटेन, कोट, बटन, सिनेमा, पेच, हॉकी, चॉक, बूट, शूट, पेंसिल, रेडियो आदि का प्रयोग दिन में दस बार करते होंगे। परन्तु आप क्या जानते हैं कि यह सब अँग्रेजी भाषा के शब्द हैं। परन्तु यदि आप बोलचाल की भाषा में ट्यूशन–व्यूशन कहते हैं तो आप हिन्दी और अँग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग करते हैं। परन्तु एक बात और जान लें, ट्यूशन का अर्थ है परंतु व्यूशन का अर्थ कुछ नहीं है। है न मजेदार बात? अर्थात शब्दों का अर्थ होता भी है और नहीं भी।

आइए, अब जाने कि आलमारी, साबुन, कप्तान, तम्बाकू, तौलिया (टॉवेल), बाल्टी, कमरा, नीलाम (नीलामी), पिस्तौल, पादरी, गिरजा किस भाषा के शब्द हैं बताइए तो जरा?

यह सब! ये 'पुर्तगाली भाषा' से हिंदी में आए हैं। यदि आप इनका प्रयोग करते हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि आप पुर्तगाली शब्द बोलते हैं। है न मजेदार बात?

उस्ताद, रेशम, जहान, चाकू, आदमी, गुलाब, चश्मा, बाग (बगीचा), दुकान, कलम, दोस्त, कारखाना, खरगोश, जमीन, रूमाल, सिपाही, सितार, शहर, रास्ता, सुराही बताइए यह किस भाषा से आए शब्द हैं? अरे भाई! यह तो 'पारसी भाषा' के शब्द हैं। जो बहुधा हिंदी प्रयोग में आते हैं।

गरीब, अमीर, ईमानदार इन शब्दों से भला कौन परिचित न होगा? और दुनिया, अदालत, किताब, हुक्का, किस्सा और मालिक शब्दों का प्रयोग भला ऐसा कौन होगा जो न करता होगा? आप जानकर आश्चर्य करेंगे कि ये 'अरबी' भाषा के शब्द हैं। अब देखें कि बुलबुल, काबू (अधिकार), तमाशा, लाश, गलीचा, दरोगा, तमगा और तोप किस भाषा के शब्द हैं? अरे! यह तुर्की भाषा के शब्द हैं।

यदि मैं आपसे कहूँ कि मेरे निवास, आवास, सदन, भवन, नीड या सदनीड पर पधारें तो शायद आप नहीं आ पाएँगे मेरे घर, पर मकान और घर ऐसे शब्द हैं जो सभी जानते हैं। इनमें से मकान उर्दू से आया है और घर हिंदी से।

हिंदी और संस्कृत में यौगिक शब्द बनते हैं, जैसे विद्यालय, 'विद्या' और 'आलय' से बना है। चरणकमल और गुणगान एक शब्द होकर भी दो शब्द और विभिन्न दो अर्थों वाले शब्दों से बनते हैं, जैसे–चरण यानी पाँव, कमल यानी कमल (एक फूल), परंतु ऐसे चरण जो कमल जैसे हों, मिलकर यहाँ पर एक विशिष्ट अर्थवाला शब्द बन जाता है।

चारपाई से कौन परिचित नहीं होगा? परंतु चार पैर होने पर भी जानवर को चारपाई नहीं कहा जा सकता। कुर्सी या मेज को भी चारपाई नहीं कहा जाता है। है न मजेदार शब्दों का संसार? अब ये भी जान लें कि वही भाषा विकसित और जीवित रहती है, जिसमें अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण करने व पचाने की शक्ति हो। अँग्रेजी भाषा में ग्रीक, जर्मन, जापानी, चीनी, पुर्तगाली न जाने कितनी भाषाओं के शब्द मिले हैं, कि मत पूछिए। इसी प्रकार हिंदी में भी शब्द मिल गए हैं। नदी और सागर जल की तरह इन्हें अलग–अलग करना नामुमकिन है। शब्दों की निराली दुनिया बहुत लंबी, चौड़ी, विशाल, अथाह है। बस इसमें गोते लगाते जाइए और आनंद उठाइए।

हाँ, इतना अवश्य स्मरण रहे कि दूसरी भाषाओं के शब्द तब ही अपनी भाषा में मिलाना उचित होगा, जब अपनी भाषा में आप जो कहना–लिखना चाहते हैं, उसे समझने–समझाने–कहने योग्य शब्द हमारी भाषा में प्रचलित न हों।

– खण्डवा (म. प्र.)

खेल खेल में हिन्दी

– पद्मा चौगांवकर

बड़ी सोसायटी थी वह! कई सारी, पाँच–छः मंजिला खड़ी इमारतों के बीच छोटे–छोटे उद्यान थे– हरियाली थी। एक उद्यान के पास 'जी' ब्लॉक में, अपने बेटे के पास रहने आए थे रतन जी। गाँव से आ तो गए थे, अब मन यहीं लगाना था। दोपहर ढलते ही उद्यान में पहुँच जाते। घूमते, बैठते, बच्चों को खेलते–देखते, समय कट जाता।

उस दिन वे बैठे–बैठे बच्चों को खेलते देख रहे थे। खेल के बीच, बच्चे बैठकर थोड़ा सुस्ताने लगे, तो रतन जी ने उन्हें पुकारा– ''आओ बच्चो! कहानी सुनना चाहोगे?''

कहानियाँ सुनना तो बच्चों को अच्छा ही लगता है। खेलना भूल, दौड़कर आए और घास के मैदान पर उनके सामने बैठ गए, और एक साथ बोले– ''सुनाइये अंकल!''

इस पर रतन जी बोले– ''बच्चो! मुझे 'अंकल' नहीं 'ताऊ जी' कहो।

एक बच्चे ने मुँह बनाकर कहा– ''ताऊ जी?', ये कैसा नाम?''

''बेटे! नाम नहीं, यह संबंध है। ताऊ याने तुम्हारे पिता का बड़ा भाई।''

उनकी बात सुनकर लड़के ने कहा– ''ओ. के.। आप तो कहानी सुनाइये।''

रतन जी ने कहना शुरू किया– ''सुनो बच्चो! एक गाँव था।'' ''गाँव?'' समीर ने कहा। ''यानी विलेज? ताऊ जी, कहानी इंग्लिश में सुनाइये न! हिंदी में मजा नहीं आता।''

''हिंदी बोल तो रहे हो, सुनना क्यों नहीं चाहते? कहानी का आनंद लेना है तो लो, मैं तो हिंदी में ही सुनाऊँगा, अंग्रेजी मुझे नहीं आती।''

ताऊ जी की बात पर शैली बोली– ''समीर! तुम चुप रहो। ताऊ जी! आप तो सुनाइए कहानी।''

समीर के साथ कुछ और बच्चे भी कुनमुनाए, अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने के कारण उन्हें हिंदी में रुचि थी ही नहीं। फिर भी कहानी का आकर्षण तो था ही। बच्चे सुनते रहे रतन जी सुनाते रहे।

दूसरे दिन फिर 'कहानी–सभा' रंग लायी, सोनिया ने अपनी मित्र से कहा– ''ये ताऊ जी यदि इंग्लिश में कहानी कहते तो कितना मजा आता। पर

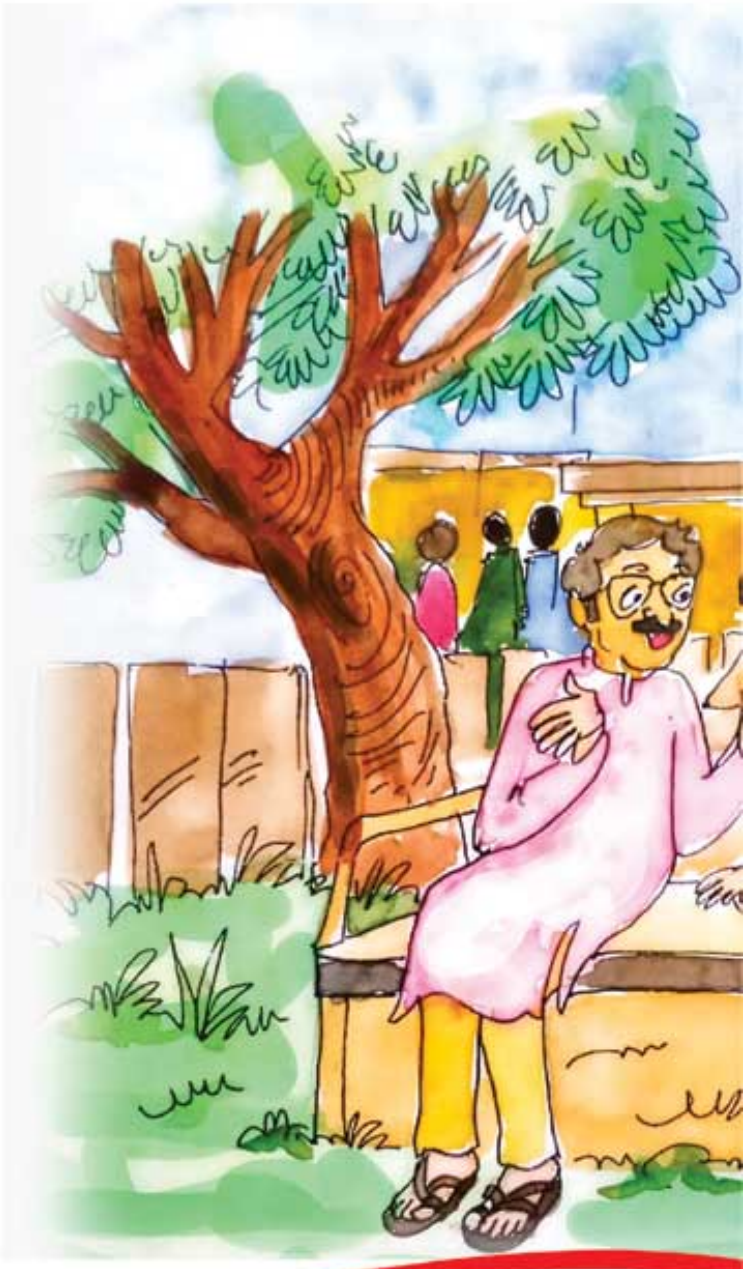

चलो, हिंदी ही सही, कहानी सुनाते तो बहुत अच्छी हैं।'' इला इस पर बोली– ''मुझे तो हिंदी में भी उतना ही मजा आता है।''

कहानियाँ कहने–सुनने का सिलसिला चल निकला। अब ताऊ जी ने बच्चों को एक–एक कॉपी–कलम भी लाने को कहा और उस दिन उन्होंने बच्चों को अपनी कल्पना से एक कहानी लिखने का काम दिया। कहानी हिंदी में लिखना थी, जो किसी घटना पर आधारित हो। कहानी के पात्र कोई भी हो सकते

हैं, एक लड़का, गिलहरी, बिल्ली, चिड़िया, शिकारी, बन्दर... कुछ भी। बच्चे प्रसन्न होकर लिखने लगे। कई बच्चों को हिंदी में लिखने में परेशानी हो रही थी। कुछ ने हिंदी–अँग्रेजी भाषा की खिचड़ी बनाकर कहानी लिख डाली।

दस–बारह बच्चों में से पाँच–सात बच्चों ने ठीक–ठाक कहानी हिंदी में लिखी। बाकी बच्चे अँग्रेजी भाषा की सहायता से ही अपनी बात रख पाए। यह देख ताऊ जी ने बच्चों को समझाया, ''बच्चो! भाषा कोई भी हो, सीखना अच्छा है। वैश्विक व्यवहार और ज्ञान पाने के लिए अँग्रेजी भी हमें आनी चाहिए। पर हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है, इसे तो हमें पूरी तरह अपनाना चाहिए। कल फिर प्रयत्न करना भाषा का ध्यान रखकर।''

चार–छ: दिनों में बच्चे ताऊ जी से हिलमिल गए थे। वे कभी उन्हें पहेलियाँ पूछते, कभी हिंदी मुहावरे और लोकोक्तियों के अर्थ समझाते, कठिन शब्दों के अर्थ कॉपी में लिखवाते, कभी विरुद्धार्थी, पर्यायवाची शब्दों से परिचय कराते, सब कुछ खेल–खेल में हो रहा था। फिर किसी दिन ताऊ जी कहानी सुनाते।

एक दिन उन्होंने बच्चों से पूछा– ''बच्चो! बताओ, आज कौन–सा विशेष दिन है?''

आद्या ने तुरंत उत्तर दिया– ''आज 'हिंदी दिवस' है– १४ सितम्बर। ताऊ जी, आज हमारे विद्यालय में 'भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन था। विषय था– 'हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा'।''

''तो चलो, आज हम एक प्रतियोगिता यहाँ करते हैं। तुम सब अपनी कॉपी में हिंदी भाषा के महत्व को बताने वाली चार–आठ पंक्तियों की कविता लिखो।'' ताऊ जी ने कहा। और बच्चे लिखने लगे। कुछ उत्साहित थे। कुछ को कविता में रुचि कम थी, फिर भी कोई रुका नहीं। जब सब कॉपियाँ जाँची गयी शैली की कविता सबसे सुंदर थी–

''राष्ट्रभाषा भारत की,
कितनी प्यारी है हिंदी,
लिखो-पढ़ो, सुनो-सुनाओ,
कितनी मनहारी है हिंदी।''

ताऊ जी ने वह कविता शैली से बच्चों को सुनाने को कहा। कविता सुनकर, सबने तालियाँ बजाकर शैली का उत्साह बढ़ाया। शैली को शाबाशी देते हुए ताऊ जी ने अपने झोले से निकालकर एक सुंदर पुरस्कार उसे दिया- वह एक कविताओं की पुस्तक थी।

वैसे आज रतन जी सभी बच्चों के लिए पुस्तकें लाये थे। उन्हें देते हुए कहा- ''कल से सभी बच्चे, बारी-बारी, अपनी पढ़ी पुस्तक के बारे में बात करेंगे- इस 'हिंदी समय-सभा' में, फिर आपस में पुस्तकें बदलकर पढ़ेंगे।

सारे बच्चे प्रसन्न थे। उन्होंने कहा- ''ताऊ जी! कल से यदि आपके पास समय हो, हम अपनी हिंदी सभा का समय कुछ बढ़ाना चाहते हैं। क्योंकि, थोड़ा समय खेल में ही निकल जाता है।'' ताऊ जी बोले- ''हाँ, हाँ, खेलना भी तो आवश्यक है। चलो, कल से सभा छः बजे तक चलेगी। घर पर कहकर आना। मेरे पास तो बहुत समय है, तुम्हारे लिए।''

''ताऊ जी! आपको रविवार को कुछ और समय निकालना होगा। हम लोगों के माँ-पिताजी आपसे मिलने आना चाहते हैं।'' यश ने कहा, तो ताऊ जी उत्साहित होकर बोले- ''हाँ, क्यों नहीं मुझे भी उनसे मिलना ही है। हिंदी के महत्व पर उनसे भी तो बात करनी होगी।''

- गंजबासौदा, (म. प्र.)

कविता

कभी कभी

- पेन्टर मदन
उमरियापान (म. प्र.)

कभी-कभी जाड़ा दुखदाई।
कभी-कभी होता सुखदाई।।
मई-जून में पास बुलाता।
लू-गर्मी से हमें बचाता।।
हँस-हँस टाले पीर पराई।
कभी-कभी होता सुखदाई।।
तंग करे जनवरी-दिसम्बर।
रहे ठिठुरते धरती-अम्बर।।
काम न आती भरी रजाई।
कभी-कभी होता सुखदाई।।
हर मौसम का यह कहना है।
सावधान हमको रहना है।।
समय-समय की बातें भाई।
कभी-कभी होता सुखदाई।।

शोर करना मना है!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

अमर कविताओं के रचनाकार : द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

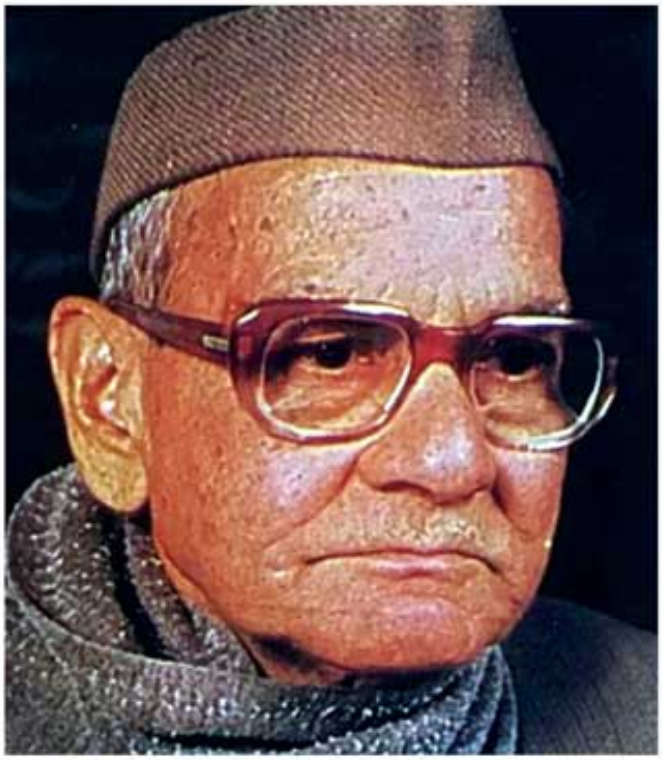

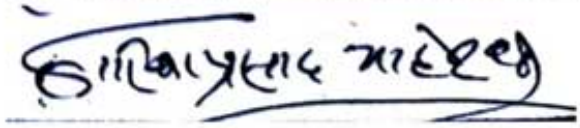

प्यारे बच्चो!

उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के रोहता गाँव में प्रेमसुख और सरयू देवी की संतान के रूप में जन्में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (१ दिसंबर १९१६–२९ अगस्त १९९८) को भला कौन नहीं जानता? उन्होंने **वीर तुम बढ़े चलो, जिसने सूरज चाँद बनाया, हम सब सुमन एक उपवन के, मैं सुमन हूँ, यदि होता किन्नर नरेश मैं और इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है** जैसी न जाने कितनी अमर कविताएँ रचीं। उन्होंने वैसा लिखा, जैसा कोई नहीं लिख सका। भारत और लंदन में शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त उन्होंने जीविका के लिए शिक्षा का क्षेत्र चुना और शिक्षक, शिक्षा प्रसार अधिकारी, पाठ्य पुस्तक अधिकारी, उप शिक्षा निदेशक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर रहे। साक्षरता निकेतन के निदेशक के रूप में भी उनका प्रदेय उल्लेखनीय है। माहेश्वरी जी ने बड़ों के लिए लिखना प्रारम्भ किया था, किन्तु जब उनके गुरु वंशीधर जी ने यह अहसास कराया कि बच्चों के लिए स्तरीय साहित्य का अभाव है, तो उन्होंने प्रमुखता से बाल साहित्य सृजन किया। बच्चों के लिए उनका पहला कविता संग्रह **'कातो और गाओ'** १९४७ में प्रकाशित हुआ था। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं : **लहरें, बढ़े चलो, अपने काम से काम, बुद्धि बड़ी या बल, माखन–मिसरी, हाथी घोड़ा पालकी, सोने की कुल्हाड़ी, अंजन, सोच समझ कर दोस्ती करो, सूरज सा चमकूँ मैं, हम सब सुमन एक उपवन के, सतरंगा पुल, गुब्बारे प्यारे, हाथी आया झूम के, बाल गीतायन, सीढ़ी–सीढ़ी चढ़ते हैं, हम हैं सूरज चाँद सितारे, जल्दी सोना, जल्दी जगना, मेरा वंदन है, कुशल मछुआरा, नीम और गिलहरी, चांदी की डोरी, ना मौसी ना, चरखे और चूहे।**

माहेश्वरी जी ने बच्चों के लिए कहानियाँ भी लिखीं। उनकी बाल कहानियों की तीन पुस्तकें छपीं–**श्रम के सुमन, बाल रामायण, शेर भी डर गया।**

बालगीतायन कृति के लिए उन्हें वर्ष १९७७ में बाल साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार मिला था। 'बालगीतायन' उनकी ही नहीं, समूचे बाल साहित्य जगत की बेजोड़ कृति है। इसमें पहली बार बच्चों की सर्वाधिक (१९३) कविताएँ प्रकाशित हुई थीं।

माहेश्वरी जी की चयनित बाल कविताएँ **'द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी रचनावली'** के द्वितीय और तृतीय खंड में भी संकलित हैं। खंड काव्य 'क्रौंच वध' और 'सत्य की जीत' के साथ–साथ उनकी ढेरों कविताएँ आज भी पाठ्यक्रम का भाग हैं। उनकी

आत्मकथा की पुस्तक **'सीधी राह चलता रहा'** शीर्षक से प्रकाशित हुई है।

इधर डॉ. ओम निश्चल और उनके सुपुत्र डॉ. विनोद माहेश्वरी के संपादन में **'द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी बाल गीत कोश'** का शीघ्र प्रकाशन होने जा रहा है, आप उसे अवश्य पढ़ना। आइए, यहाँ पढ़तें हैं उनकी कुछ बहुचर्चित बाल कविताएँ–

मुन्ना-मुन्नी

मुन्ना-मुन्नी ओढ़े चुन्नी,
गुड़िया खूब सजाई।
किस गुड्डे के साथ हुई तय,
इसकी आज सगाई?

मुन्ना-मुन्नी ओढ़े चुन्नी,
कौन खुशी की बात है,
आज तुम्हारी गुड़िया प्यारी
की क्या चढ़ी बरात है?

मुन्ना-मुन्नी ओढ़े चुन्नी,
गुड़िया गले लगाए,
आँखों से यों आँसू ये क्यों,
रह-रह बह-बह जाए?

मुन्ना-मुन्नी ओढ़े चुन्नी,
क्यों ऐसा यह हाल है,
आज तुम्हारी गुड़िया प्यारी
जाती क्या ससुराल है?

भालू आया

लाठी लेकर भालू आया
छम-छम छम।
डुग-डुग डुग-डुग बजी डुगडुगी
डम-डम डम।
ढोल बजाता मेंढक आया,
ढम-ढम ढम।
मेंढक ने ली मीठी तान,
और गधे ने गाया गान।

एक पैर पर

जब से जनम लिया है मैंने,
एक पैर पर खड़ा हुआ हूँ।
आँधी-पानी-गर्मी-सर्दी
झेल-झेल कर बड़ा हुआ हूँ।
सर पर सहता धूप, मगर
मैं औरों को देता छाया हूँ।
साँस आखिरी तक परहित में
रखता रत अपनी काया हूँ।
देह सूख जाती जब मेरी,
तब भी अंग-अंग कट-चिर कर।
आता काम सभी के, चाहे
भले राख हो जाऊँ जलकर।
लेकिन कहता नहीं कभी कुछ,
रहता आया सदा मौन हूँ।
जड़ मेरी गहरी धरती में,
बतलाओ तुम मुझे, कौन हूँ?

शिशु गीत

अटकन-बटकन

अटकन-बटकन
दही चटोकन
बाबा लाए टॉफी,
एक टॉफी टूटी,
मुनिया बिटिया रूठी।
अटकन-बटकन
दही चटोकन
बाबा लाए बरफी,
एक बरफी टूटी,
मुनिया बिटिया रूठी।
अटकन-बटकन,
दही चटोकन
बाबा लाए गुड़िया,
एक गुड़िया टूटी,
मुनिया बिटिया रूठी।
टॉफी तो बहुतेरी,
बरफी तो बहुतेरी,
गुड़िया भी बहुतेरी,
फिर क्यों मुनिया रूठी?
रूठी झूठी-मूठी।

किशोर गीत

मेरी अभिलाषा है

सूरज-सा चमकू मैं,
चंदा-सा चमकू मैं,
जगमग-जगमग उज्ज्वल,
तारों-सा दमकू मैं,
मेरी अभिलाषा है।
फूलों-सा महकू मैं,
विहगों-सा चहकू मैं,
गुंजित सावन उपवन,
कोयल-सा कुहकू मैं,
मेरी अभिलाषा है।
नभ से निर्मलता लूँ,
शशि से शीतलता लूँ,
धरती से सहनशक्ति,
पर्वत से दृढ़ता लूँ,
मेरी अभिलाषा है।
मेघों-सा मिट जाऊँ,
सागर-सा लहराऊँ,
सेवा के पथ पर मैं,
सुमनों-सा बिछ जाऊँ,
मेरी अभिलाषा है।

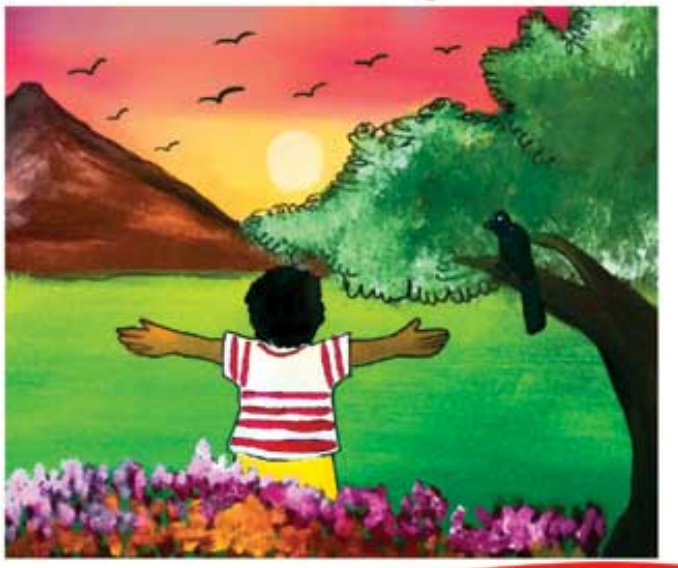

प्रयाण गीत

वीर तुम बढ़े चलो

वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
हाथ में ध्वजा रहे
बाल दल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं
दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

सामने पहाड़ हो
सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं
तुम निडर डटो वहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

प्रात हो कि रात हो
संग हो न साथ हो
सूर्य से बढ़े चलो
चन्द्र से बढ़े चलो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
एक ध्वज लिये हुए
एक प्रण किये हुए
मातृ भूमि के लिये
पितृ भूमि के लिये
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
अन्न भूमि में भरा
वारि भूमि में भरा
यत्न कर निकाल लो
रत्न भर निकाल लो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

विनोबा और नागरी

– प्रभुलाल चौधरी

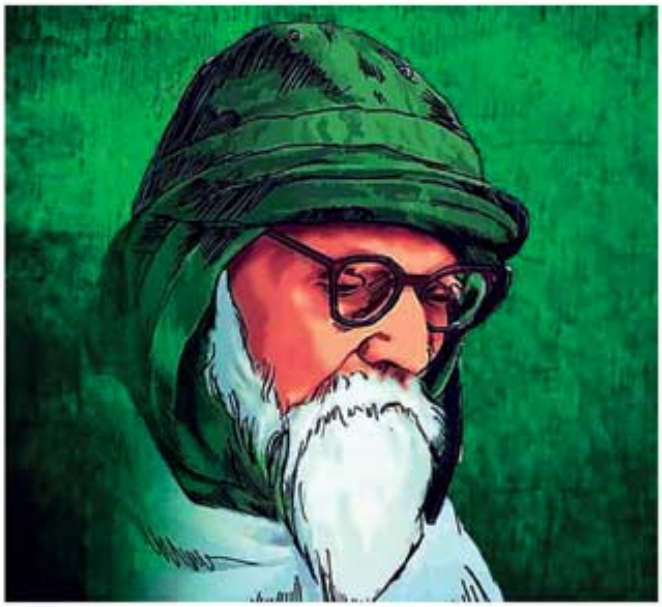

आचार्य विनोबा भावे एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे, वे कर्मठ स्वतंत्रता सैनानी होने के साथ-साथ बहुभाषाविद् मनीषी, साहित्य और दर्शन के मर्मज्ञ स्वभाव के कर्मयोगी संत महापुरुष थे। उनमें विद्वत्ता के साथ-साथ सत्यनिष्ठा एवं अहंकार-हीनता का अनोखा सामंजस्य था। विनोबा जी के नागरी लिपि की वैज्ञानिकता को देखते हुए अपना यह बहुमूल्य सुझाव दिया था कि **सभी भारतीय भाषाओं को अपनी-अपनी लिपि के साथ-साथ नागरी लिपि को भी अपना लेना चाहिए। इससे इन भाषाओं में निकटता आएगी और नागरी लिपि एक जोड़ लिपि का कार्य करेगी।**

उन्होंने कहा था नागरी लिपि यदि हिन्दुस्थान की सब भाषाओं के लिए चले, तो हम सब लोग बिल्कुल निकट आ जाएँगे। विशेषकर दक्षिण की भाषाओं को नागरी लिपि का लाभ होगा। वहाँ की चार भाषाएँ अत्यन्त निकट हैं। उनमें संस्कृत शब्दों के अलावा उनके अपने जो प्रांतीय शब्द हैं तेलुगु, कन्नड़, मलयालम में बहुत शब्द समान हैं। ये शब्द नागरी लिपि में यदि आ जाते हैं, तो दक्षिण की चारों भाषाओं के लोग चारों भाषाएँ १५ दिन में सीख सकते हैं।

विनोबा भावे आध्यात्मिक संत थे। वे सर्वोदय विचार धारा के प्रवर्तक तथा समर्थक थे। वे सजग तथा सधे हुए भाषाविज्ञानी तथा क्रांतिकारी लिपि वेत्ता थे। देवनागरी का गहनता तथा विशदता के साथ उन्होंने अध्ययन किया था। उनका मानना था कि भाषायी विविधता सामाजिक सम्प्रेषण में इतनी बाधक नहीं है जितनी बाधक लिपिगत विभिन्नता है। भाषा का संबंध संभाषण से है, लिपि का संबंध लेखन से। पढ़ना भी लेखन से संबंध रखता है। उच्चारण, वर्तनी तथा व्याकरण भाषा के गठनात्मक अवयव हैं। लेखन तथा पठन भाषा अधिगम के कौशल हैं। लेखन तथा पठन उच्चारण को स्थित ही नहीं बनाते अपितु विस्तृत, व्यापक, बहुआयामी तथा बहुस्तरीय भी बनती हैं। भाषा में शिक्षा, अर्थ तथा परिवेश भेद से अन्तर उत्पन्न होता है। शिक्षा के आधार पर भाषा दो प्रकार की मानी जाती हैं- (१) शिक्षित वर्ग की भाषा। (२) अशिक्षित वर्ग की भाषा। अर्थ के आधार पर भाषा निम्नलिखित तीन प्रकार की मानी गई हैं- (१) उच्च वर्ग की भाषा, (२) मध्यम वर्ग की भाषा एवं (३) निम्न की भाषा। परिवेश के आधार पर निम्नलिखित दो प्रकार की भाषाएँ मानी गई हैं- (१) नगरीय भाषा (२) ग्राम्य भाषा।

विनोबा जी सर्वोदयी भावना उनके लिपि संबंधी मतों में अभिव्यंजित हुई है। देवनागरी संबंधी निम्नलिखित कथनों में उनका सर्वोदयी दर्शन ध्यातव्य है- ''शंकराचार्य ने केरल से कश्मीर तक भ्रमण किया तो संस्कृत का आधार लेकर किया। रामानुजाचार्य ने भी संस्कृत का आधार लेकर सारे भारत में भ्रमण किया। उन दिनों संस्कृत ही चलती थी, इसलिए एक ही लिपि चलती थी ब्राह्मी लिपि।

बाद में नागरी लिपि आई। उसके बाद अलग-अलग भाषाएँ बनीं तो अलग-अलग लिपियाँ आईं। आज भिन्न-भिन्न प्रदेश के लोग लिपि भेद के कारण अलग हुए हैं।'' आचार्य विनोबा भावे की सद्प्रेरणा से १७ अगस्त, १९७५ को गाँधी स्मारक निधि के तत्वावधान में 'नागरी लिपि परिषद्' की स्थापना हुई थी, जिसके अध्यक्ष प्रसिद्ध गाँधीवादी विचारक श्रीमन्नारायण बने। नागरी लिपि परिषद् के प्रचारार्थ एक पत्रिका निकालने का निर्णय लिया गया, जो 'नागरी-संगम' के नाम से अब तक निरन्तर प्रकाशित हो रही है।

विनोबा जी महात्मा गाँधी के निधन के बाद सत्य, अहिंसा और नैतिक मूल्यों के प्रबल समर्थक के रूप में सारे विश्व में विख्यात हुए। लोग देश-विदेश से उनके मूल्यवान और रचनात्मक विचारों के कारण मिलने आते थे। मुझे १९६७ ई. में इनके दर्शनों का पवनार आश्रम में सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इनके आश्रम में अनेक विदेशी विद्वान आए हुए थे, किन्तु विनोबा जी उन दिनों मौन रहते थे। उन्होंने अपने सामने एक स्लेट रखी हुई थी, जिस पर जिज्ञासुओं के प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर देते थे।

विनोबा जी आयु-भर, देश-सेवा, मानव-सेवा आर दरिद्र नारायण की उपासना में लगे रहे। उनका सबसे बड़ा योगदान भारतीय भाषाओं के लिए नागरी लिपि के वैकल्पिक प्रयोग है। हम सब देशवासियों को उनके इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाना चाहिए।

- उज्जैन (म. प्र.)

शिशु गीत

आदरणीय मयंक जी का जन्म ०१ सितम्बर १९२५ को कानपुर में हुआ और वे आप बच्चों के लिए अपार साहित्य रचकर २६ जून २००० को हमसे चिर विदा ले गए। उनका एक प्यारा बाल गीत-

तितली

- चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक'
कानपुर (उ. प्र.)

जो मैं नन्हीं तितली होती,
उड़ती रहती कभी न सोती।

बागों में रहती दिन रात,
कली-कली से करती बात।

उड़-उड़ करके जब थक जाती,
बैठ फूल पर मैं सुस्ताती।

सूबेदार मेजर खड़कासिंह लिंबू

आज आप जिस बहादुर लड़ाके की घटना पढ़ने जा रहे हैं उनका नाम था सूबेदार मेजर खड़कासिंह लिम्बू। सुन्दर पर्वतीय प्रदेश मणिपुर के मंत्री गाँव में पिता श्री अर्थवीर जी के घर जन्म लेकर वे ५ दिसम्बर १९२९ को ८ असम राइफल्स में प्रवेश पा गए। लक्ष्य निश्चित होने पर उसे पाना ही है यह अडिग संकल्प उनके व्यक्तित्व की पहचान बन चुका था। द्वितीय विश्व युद्ध में उनका यही गुण उन्हें 'मिलिट्री क्रास' से सम्मानित करवा चुका था। कठिन लक्ष्य को साहस से प्राप्त करने वाले वीरों को अवसर भी वैसे ही मिलते हैं।

उन्हें बताया गया घनघोर जंगल में एक बड़े गड्डे में प्रतिद्वंद्वी छुपा बैठा है। चारों ओर बाँसों के अवरोध से घिरा यह अड्डा बहुत सुरक्षित था पर उस पर हमला करना उतना ही खतरनाक। उग्रवादियों को खत्म कर मातृभूमि को सुरक्षित रखने की सौगंध खा चुके वीरों को खतरों से कब भय लगा है। जैसे ही २६ अप्रैल १९६९ को यह लक्ष्य, मेजर खड़कासिंह लिंबू को मिला वे अपने साथियों सहित उत्साह से भर उठे। कठिनाई कायरों को डराती है, वीरों को हर्षाती है। उस तड़के ही प्राण हथेली पर लिए वे अपने साथियों सहित उस लकड़ी–बाँसों के घेरे को ध्वस्त करते आगे बढ़ चले। दो उग्रवादी ढेर हुए। एक गोली मेजर के शरीर में भी धँसी थी। वे घायल होकर भी घिसिटते हुए आगे बढ़े और दो ग्रेनेड उग्रवादी अड्डे पर उछाल दिए। तीन आततायी और यमलोक पहुँचाए। अपनी अंतिम श्वास तक साथियों का साहस बढ़ाते हुए इस अप्रतिम योद्धा ने असम राइफल्स का गौरव बढ़ाते हुए विद्रोही ठिकाने को नष्ट कर दिया।

मरणोपरांत उन्हें अशोकचक्र मिला। मानो सम्मान स्वयं सम्मानित हुआ।

प्रतिभा परिचय

लगन पक्की हो तो सर्वश्रेठता असंभव नहीं

इन्दौर। सच्ची लगन एवं परिश्रम से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं होता। लक्ष्य निर्धारित कर सतत उसे पाने की चेष्टा करने वाले के लिए सफलता केवल मिलती ही नहीं एक इतिहास रच जाती है।

ऐसी ही उपलब्धि है **डॉ. प्रियंका पसारी** की। वे इन्दौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से पिछले ५८ वर्षों में अँग्रेजी विषय को लेकर डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त करने का गौरव प्राप्त करने वाली प्रथम विद्यार्थी हैं। डॉ. प्रियंका ने अपनी २५ वर्ष की अवस्था में ही, पी.एचडी. की उपाधि प्राप्त कर ली थी। इसके पश्चात् भी अपनी शैक्षणिक प्रतिभा को निरंतर निखारते हुए वे डी.लिट्. की सर्वोच्च उपाधि को प्राप्त कर सकीं। श्री जयप्रकाश चौकसे एवं डॉ. अशोक सचदेवा के वर्षों सतत मार्गदर्शन एवं परिवार के प्रोत्साहन से डॉ. प्रियंका प्रतिदिन घण्टों अध्ययन में डूबी रहतीं। वे आगे भी शैक्षिक जगत में कुछ अनूठा, कुछ उत्कृष्टतम करने के लिए संकल्पित हैं।

ऐसी प्रतिभाएँ सदैव अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा बनती है। 'देवपुत्र' परिवार डॉ. प्रियंका पसारी को हार्दिक बधाई व मंगलकामनाएँ देता है।

कविता

बूदें पानी की

– अश्वनी कुमार पाठक

करतीं छत पर छुम छन छनन,
बूँदें पानी की।
बारिश के पहले दिन भीगी,
खटिया नानी की।

छत से मोटी धार बही,
औ' आँगन तक आयी।
चौहद्दी से घर की लेकिन,
निकल नहीं पायी।

बूँद-बूँद पानी के घर में-
कल तक थे लाले।
प्यासे मटका-मटकी,
हमने मुँह तक भर डाले।

आँगन के कोने पर हमने,
खोदा एक कुआँ।
उसी कुएँ में सारा पानी,
आकर जमा हुआ।

एक बूँद भी पानी की,
हम व्यर्थ न जाने दें।
खुशी-खुशी वर्षा रानी को,
घर में आने दें।

– सिहोरा, जबलपुर (म. प्र.)

हिन्दी है महतारी

– राजा चौरसिया

सितम्बर मास की शुरूआत से ही विकास के मन में नाना प्रकार के विचार आसमानी बिजली की तरह कौंधने लगते थे। किशोर आयु का होने से सोच–समझ की दृष्टि से छोटे पंख ऊँची उड़ान की वह पहचान था।

अपनी मातृभाषा हिन्दी के प्रति उसका मानो जी से अति लगाव था। इस बार विकास हिन्दी की दयनीय और चिंतनीय दशा को लेकर बहुत आकुल–व्याकुल था। स्वतंत्रता के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर सम्पूर्ण देश में स्वाधीनता का अमृत महोत्सव विशेष धूमधाम से मनाया गया, लेकिन उसका असर केवल ऊपर–ऊपर ही प्रतीत हुआ।

वह इसी भाँति आगे भी सोचने लगा– ''हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में शासकीय और अशासकीय स्तर पर उत्सवी आयोजन नगरों से गाँवों तक प्रतिवर्ष होते हैं। इसके बाद भी आज भी हमारी हिन्दी महतारी हमसे बिछुड़ती जा रही है, तथा इस सगी माँ के रहते सौतेली अँग्रेजी पतंग की तरह बड़ी तेजी से उड़ती जा रही है। क्या ''नदी किनारे घोंघा प्यासा'' की कहावत चरितार्थ करना उसके बेटों को शोभा देता है? ऐसा नहीं होना चाहिए।''

इतना सोचने के उपरांत उसने अपने सहपाठी मित्र प्रभात के घर जाने का निश्चय किया। उसे यह पता था कि उसके दादा जी प्राय: यही कहा करते हैं– **''जो पेड़ अपनी जड़ों को भूल जाते हैं, वे अधिक दिनों तक हरे नहीं रह पाते हैं। अपनी मातृभाषा से जो प्रेम करता है, वही अपनी मातृभूमि से प्रेम कर सकता है।''**

कुछ समय पश्चात विकास अपनी साइकिल से वहाँ पहुँच गया। प्रभात और उसके दादाजी घर की परछी में बिछी दरी पर बैठे परस्पर बतिया रहे थे। विकास को देखते ही दोनों प्रसन्नता से फूले नहीं समाए, क्योंकि वे जानते थे कि विकास नई सूझ–बूझे के कारण छोटे मुँह बड़ी बात कहने में प्रवीण है।

''क्यों दादाजी! सभी लोग हिन्दी दिवस से लेकर हिन्दी पखवाड़ा तक मनाते हैं। हर–हर हिन्दी घर–घर हिन्दी, अपनी इस मातृभाषा को भारतमाता का मुकुट होना चाहिए, हिन्दी से है हिन्दुस्थान'' आदि के जयकारे जैसे नारे लगाते नहीं अघाते हैं, किन्तु दूसरी ओर भारत को 'इंडिया' कहते हैं।

अँग्रेजी की वाह–वाह सुनकर बेचारी हिन्दी आह भर रही है। 'हिन्दी दिवस' को 'हिन्दी डे' कहना क्या चुल्लूभर पानी में डूबने की बात नहीं है? मुझे तो एक बात पर बड़ी हँसी आती है।''

''कौन सी बात!'' यह कहना दादा और पोते का था।

''मेरे एक मामाजी हैं। उनके बेटे का नाम पप्पी है। जब मुझे आश्चर्य हुआ तो मैंने मोबाईल से अँग्रेजी की डिक्शनरी में उस नाम को ढूँढ़ा तो पता चला कि पप्पी का अर्थ कुत्ते का बच्चा अर्थात पिल्ला होता है।

''नकल के पीछे अकल न होने से ही ऐसा होता है।'' प्रभात ने हँसकर समर्थन प्रकट किया।

''लगे हाथ एक बात और।''

''वह भी बताओ, उसे भी मत छिपाओ।''

''अँग्रेजी वाले कहते हैं कि शार्टकट रास्ता ही सुहाता है। इसीलिए डैडी को डैड कहा जाता है, जबकि डैड का अर्थ सबको पता है। शार्टकट के मामले में हिन्दी बहुत आगे है। अँग्रेजी में कहते हैं– गुड मॉर्निंग और गुड नाईट लेकिन हिन्दी में कहते हैं– सुप्रभात और शुभ रात्रि, जिनमें अँग्रेजी की तुलना में कम अक्षर हैं। हम जिसे माँ कहते हैं, उसे ये मदर कहते हैं, किन्तु अभी भी हम 'देशी चोंच, विदेशी दाना' के रंग–ढंग छोड़कर पके चावल को राइस न कहकर भात कहकर प्रसन्न रहते हैं।

हम इस वर्ष से विद्यालय में भी मातृभाषा का गुणगान करेंगे।''

''तोता पिंजरे में बंद रहकर दूसरों की भाषा बोलता है, इसलिए उसे मिट्ठू कहा जाता है। उसका दूसरा नाम रट्टू या पिट्टू भी है।'' प्रभात ने ऐसा ज्यों ही कहा, त्यों ही दादाजी तथा विकास हँस पड़े।

संयोग से उसी अवसर पर मित्रता को अपनी बोली में मिताई कहने वाला सहपाठी गोपाल भी आ गया।

''आँगन के एक कोने में खड़े रहकर आप लोगों का यह संवाद कुछ तो सुन चुका हूँ। यदि हरी झंडी मिले तो मैं भी कुछ कहूँ? खग जाने खग ही की भाषा।''

''हाँ–हाँ! तुम भी कुछ कहो जी!'' सभी ने कहा।

''मेरा कहना है कि 'हिन्दी दिवस' को 'हिन्दी डे' और 'स्वागतम्' को 'वेलकम' कहने वालों को दर्पण दिखाने के बदले हम लोग स्वयं अपनी हिन्दी महतारी के बेटे अपना कुछ कर्त्तव्य निभाएँ।''

विकास– ''अच्छा! तो हम लोग अपना

जन्मदिन भारतीय संस्कार के अनुसार मनाएँ। केक न काटें और मोमबत्तियों के बदले माटी के दीयों का उपयोग करें। 'हैप्पी बर्थ डे' न कहकर 'जन्मदिवस हो मंगलमय' कहकर हार्दिक बधाई दें। 'थैंक्यू' के बदले 'धन्यवाद' कहना और अपने से बड़ों के चरण छूकर उनसे भगवान के प्रसाद जैसा हमें आशीर्वाद लेना चाहिए। एक बात और हम अपने हस्ताक्षर अपनी मातृभाषा में ही करें यह छोटा-सा प्रयोग हमारे मातृभाषा के प्रति सगर्व जुड़ाव को प्रकट करता है।''

दादाजी ने यह सुनते ही उसकी पीठ थपथपाई।

''अब हम तीन,
हिन्दी से प्रेम की बजाएँगे बीन,
घर से लेकर बाहर तक सुनाएँगे
जन्मभूमि-सी प्यारी है,
हिन्दी भी महतारी है।''

यह समवेत स्वर वहाँ गूँज रहा था।

- उमरियापान, कटनी (म. प्र.)

पुराण कथा-गणेश विसर्जन

बिना सोचे बोलना नहीं, बिना समझे लिखना नहीं

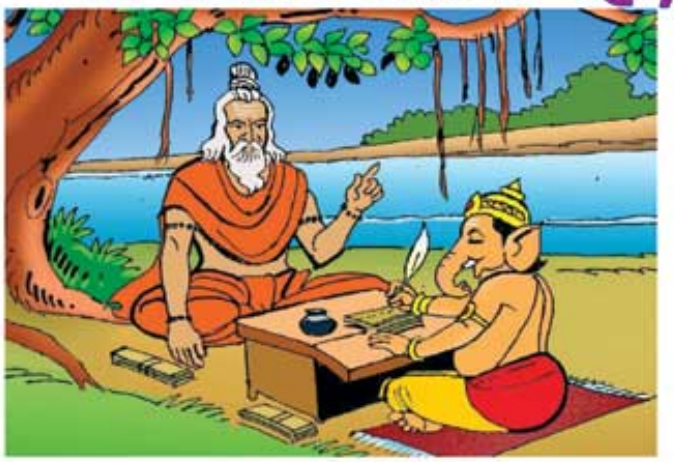

महर्षि वेदव्यास जब महाभारत की श्लोकबद्ध रचना करने के लिए संकल्पित हुए, तब संकट यह उत्पन्न हुआ कि ऋषिवर जिस तेज गति से इस महाकाव्य को रचने वाले थे, उतनी ही शीघ्रता से और शुद्धता से इसे लिपिबद्ध कौन करेगा? तब श्री गणेश जी से इस महान ग्रंथ को लिपिबद्ध करने कि प्रार्थना की गई। श्री गणेश जी ने इसे श्रुत लेख के रूप में लिखना स्वीकार किया, किन्तु उनकी शर्त थी कि वे एक बार लिखना प्रारंभ करने के बाद ग्रंथ पूर्ण होने तक लगातार लिखेंगे। अर्थात वे जितनी देर में एक श्लोक लिखेंगे उतनी देर में इसे बोलते हुए व्यास जी को अगला श्लोक बना लेना होगा। व्यास जी इस शर्त को स्वीकारते हुए एक काव्य कौशल का सहारा लिया। वे बोले- ''मैं जो भी बोलूँगा उसे आप भी बिना समझे नहीं लिखेंगे।'' गणेश जी ने स्वीकार किया। तब महर्षि ने इस प्रकार श्लोकों की रचनाएँ की कि कुछ सरल श्लोकों के बाद कोई-कोई कठिन श्लोक आ जाता था। गणेश जी उसका अर्थ विचार करके उसे लिखते तब तक व्यास जी अगले श्लोक बना लेते थे।

बच्चो! दोनों ही महान ज्ञानी देवीय विभूतियाँ थीं। लेकिन बिना सोचे बोलना नहीं, बिना समझे लिखना नहीं। यह संदेश सबको देने के लिए उन्होंने यह लीला रची थी।

महाभारत अत्यंत शौर्यमयी कथा है। उसे निरंतर समझते हुए लिखते समय गणेश जी के शरीर का ताप बहुत बढ़ गया तब गीली मिट्टी लेपन कर, सरोवर में स्नान करवाकर उसे शान्त करने का प्रयत्न किया गया। किंवदंति के अनुसार मिट्टी के गणेश बनाकर उसे जल में विसर्जन करने की परंपरा का एक कारण यह भी माना जाता है। समय के साथ परंपराओं में बदलाव लाना होता है। इसलिए वर्तमान युग में जल प्रदूषण को देखते हुए तो घर में ही गणेश विसर्जन करना उचित है।

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

चिंकी के दोस्त

– नीना सिंह सोलंकी

एक शहर में बहुत बड़े भवन की बीसवीं मंजिल पर, एक फ्लेट में चिनी रहती थी। चिनी के पिताजी किशोर सुबह से ही नौकरी पर निकल जाते थे। उसकी माँ मीना घर पर ही रहती थीं। चिनी उनकी इकलौती बेटी थी। माँ–पिताजी उसे बहुत प्यार करते थे उन्होंने चिनी के लिए, उसकी पसंद के गुड्डे–गुड़िया और भी बहुत से खेल–खिलौने लाकर दिए थे। परिवार में कोई और न होने के कारण, ये खेल–खिलौने ही उसके संगी–साथी थे।

चिनी को पक्षियों से बहुत प्रेम था। पिताजी ने उसके लिए एक तोता लाकर दिया था। जिसका नाम, चिनी ने मिक्की रखा था। घर की बालकनी में जैसे ही कोई चिड़िया या अन्य पक्षी आकर चहचहाता तो मिनी दौड़कर उसे देखने जाती। वे उसे देखकर हक्का–बक्का रह गई और फुर्ती से पीछे हट गई। बन्दर रेलिंग पकड़ कर झूलने लगा।

''पीछे रहो बेटी!'' पिताजी ने चिनी को हिदायत दी।

''पिताजी देखो बतख कैसे क्रैक–क्रैक कर रहे हैं।'' छोटे जलाशय में तैरते बतख देखकर चीनी तालियाँ बजाने लगी।

''हाँ बेटी! वह उधर देखो उजले पंख वाला बगुला, कैसे ध्यान लगाकर खड़ा है। ध्यान लगाना बगुले की विशेषता है।''

''पिताजी! कछुए की पीठ तो देखो, कितनी मोटी है। बिलकुल हेलमेट की तरह।'' चिनी ने कछुए की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा।

''हाँ बेटी! जब भी कोई इनके पास आता है तो यह अपने आपको समेट कर अन्दर छिपा लेते हैं। इनकी पीठ इनके रक्षा कवच का काम करती है।'' चिनी चिड़ियाघर देखकर बहुत प्रसन्न थी।

चिनी को अपने घर की बालकनी बहुत पसंद थी। वह वहाँ से, शहर की सुबह के दृश्य और रात की झिलमिल रोशनी देखती और आनंदित होती थी। इतनी ऊँचाई से उसे, नीचे जाती हुई गाड़ियों की रोशनी ऐसी लगती जैसे बहुत सारे जुगनू एक कतार में चल रहे हों। शाम को उनका मन होता कि नीचे उद्यान में जाकर खूब खेले परन्तु माँ उसे वहाँ जाने की आज्ञा नहीं देतीं थीं। वह मन मसोसकर रह जाती। उद्यान में खेलते बच्चों को देखते हुए ही उसकी शाम बीत जाती।

चिनी विद्यालय में बड़ी प्रसन्न रहती। सारी सहेलियाँ आपस में बातें करतीं, हँसतीं, पढ़ाई करतीं और खेल के घंटे में, हरी–हरी घास में मन भर खेलतीं परन्तु घर जाने के नाम से ही वह उदास हो जाती।

एक दिन उसने विद्यालय से लौटकर माँ से कहा– ''माँ! बीसवीं मंजिल पर लटके–लटके मुझे

अब ऊब होने लगी है। आप उद्यान में जाने नहीं देतीं। आखिर इस मिक्की से कब तक बात करूँ ?''

पहली बार चिनी ने इतने सारे प्रश्नों के साथ अपने मन की बात कही थी। माँ बोलीं, ''बेटी! आप बिल्कुल सही कह रही हो परन्तु अभी छोटी हो इसलिए अकेले भेजने में डर लगता है। कहो तो पिताजी से और खिलौने मंगवा दूँ?''

''माँ! खिलौने तो घर में बहुत हैं। अब मैं छोटी बच्ची नहीं हूँ। कक्षा पाँच में आ गई हूँ।'' कहते-कहते चिनी रुआँसी हो गई।

''अरे! मैं तो भूल ही गई थी कि मेरी बेटी बड़ी हो गई है। अच्छा मैं तुम्हें उद्यान में ले जाया करूँगी। अब तो प्रसन्न है न मेरी बिटिया रानी!'' मीना ने प्यार से चिनी की पीठ पर हाथ रखा।

''सच माँ? आप बहुत अच्छी हैं।'' तभी मिक्की तोता, चिनी चिनी चिल्लाने लगा।

''देखो बेटी! मिक्की आपसे कह रहा है कि चिनी! माँ से रूठो मत हो।'' माँ ने ठहाका लगाया। चिनी भी हँसने लगी।

शाम को चिनी माँ के साथ उद्यान में गई। मीना बैंच पर बैठकर चिनी को उछल-कूद करते देख रही थी। वह क्यारियों के पास जाकर गुलाब, कनेर, गेंदे और गुड़हल के फूलों को निहार रही थी।

''माँ! देखो कितने सुन्दर फूल हैं।''

''हाँ बेटी! पर इन्हें तोड़ना नहीं चाहिए। दूर से ही देखना चाहिए।'' माँ उठकर उसके पास आ गई थीं। उद्यान में अँधेरा होने लगा तो वे दोनों घर आ गईं। दूसरे दिन सुबह चिनी जब बालकनी में गई तो वहाँ कबूतर का एक जोड़ा बैठा हुआ था।

''माँ! देखो कितने प्यारे कबूतर हैं। इनके पंखों पर गुलाबी और रंग-बिरंगी पट्टियाँ कितनी सुंदर लग रही हैं।''

''हाँ बेटी! कबूतर बहुत लुभावने लगते हैं।'' वे उनके लिए गेहूँ और बाजरा ले आईं। चिनी ने मुंडेर पर बाजरा रख दिया। वे आकर बाजरा चुगने लगे।

''चिनी! विद्यालय भी जाना है। बेटी! जल्दी नाश्ता करो।''

चिनी प्रतिदिन कबूतर के जोड़े को दाना डालती। उसने एक सकोरे में पानी भी रख दिया था। वे दाना खाकर पानी पीते और फिर सकोरे में बैठकर खूब नहाते। चिनी को उन्हें देखकर बड़ा आनंद आता। अब मिक्की के साथ कबूतर भी उसके दोस्त बन गए थे।

माँ के साथ उद्यान में खेलने हेतु चिनी अब सारे कार्य समय पर करती। हर समय प्रसन्न रहती। विद्यालय से मिले गृहकार्य को करने में टाल-मटोल करती थी। अब वहाँ से आते ही कर लेती थी।

''आजकल तो अपनी चिनी बहुत प्रसन्न रहती है। पढ़ाई भी मन लगाकर करती है। इस बार के मासिक परीक्षा में उसके बहुत अच्छे नंबर आए हैं।'' माँ, चिनी के पिताजी को बता रही थीं।

''यह तो बड़ी प्रसन्नता की बात है। तुमने इसे उद्यान ले जाकर बहुत अच्छा किया है। बाहर जाकर और खेलकूद कर ही बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। उनकी प्रतिभा चार दीवारी में कैद होकर विकसित नहीं हो पाती।'' किशोर बोले।

''हाँ, हम ही गलत थे।'' माँ ने गहरी साँस ली।

''चलो अब तो वह खुश है। पशु-पक्षी व जीव-जन्तु हमारे पर्यावरण का अभिन्न अंग हैं। चिनी का उनसे लगाव और उनके विषय में जानने की उत्सुकता बड़ी प्रसन्नता की बात है।'' किशोर ने बात को आगे बढ़ाया।

एक दिन चिनी विद्यालय से लौटी तो उसने देखा कि एक गमले में दो अंडे रखे हुए हैं। वह आश्चर्य में पड़ गई कि अंडे यहाँ कैसे आए।

''माँ! यह अंडे यहाँ क्यों रख दिए?'' वह माँ का हाथ पकड़कर बालकनी में ले आई।

''बेटी! ये शायद तुम्हारे कबूतरों के होंगे।'' तभी दोनों कबूतर आकर आसपास मंडराने लगे। वे बराबर अपने पंख फड़फड़ा रहे थे।

''बेटी! ये अंडे इन्हीं के हैं।'' मीना अब सारी बात समझ चुकी थीं।

''पर ये इस तरह पंख क्यों फड़फड़ा रहे हैं? ये तो मेरे मित्र हैं न?''

''दोस्त तो हैं, पर ये अपने अंडों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। इन्हें डर है कि अंडों को कोई नुकसान न हो जाए।'' माँ ने चिनी के सर पर हाथ फेरा।

''बस हमें कुछ दिन, इनसे दूर रहना होगा फिर इनमें से बच्चे निकल आएंगे।''

''सच माँ? फिर तो बहुत मजा आएगा।'' उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। अब तो सुबह-शाम बालकनी में जाकर, अंडों से बच्चे बाहर आने की प्रतीक्षा करती। बस एक सुबह चिनी ने देखा दो छोटे-छोटे बच्चे गमले में कुनमुना रहे थे।

''माँ!... माँ!... जल्दी आइए, देखिए छोटे-छोटे बच्चे।'' चिनी मारे खुशी के उछल रही थी।

''चलो तुम्हारी प्रतीक्षा समाप्त हो गई।'' माँ बच्चों को देखकर बोलीं।

''ओ माँ! ये कितने प्यारे हैं। इन्हें हाथ लगा लूँ?''

''नहीं बेटी! थोड़े बड़े होने दो, फिर इन्हें छूना।'' माँ ने समझाया।

फिर तो चिनी सुबह उठकर सबसे पहले चूजों के पास जाती। विद्यालय से आकर उन्हें दुलारती। वे बड़े हो रहे थे। दाना चुगने लगे थे। चिनी से डरना भी बंद कर दिया था। वह हाथ बढ़ाती, तो उस पर आकर बैठ जाते।

''चिनी! अब तो तुम्हारे दो और दोस्त हो गए।'' माँ उसे आनंदित देखकर बोलीं।

''हाँ प्यारे-प्यारे दोस्त।'' चिनी ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर कहा।

– भोपाल (म. प्र.)

श्री कृष्ण कुमार अष्ठाना नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया में

इन्दौर। 'देवपुत्र' के प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना वरिष्ठ विचारक, साहित्यकार एवं पत्रकार हैं। आपकी इन्ही प्रतिभाओं से लाभान्वित होने हेतु नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया ने आपको हिन्दी पुस्तक सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत किया है। श्री अष्ठाना का अनुभव अब एन बी. टी. का भी पाथेय बनेगा। इस मनोनयन हेतु अभिनंदन बधाई।

अनूठा उपहार

चित्रकथा: देवांशु वत्स

राख की धाक

– तपेश भौमिक

मुर्शिदाबाद के नवाब बहादुर प्राय: नदिया के महाराजा कृष्णचंद्र को परेशानी में डालते रहते थे। वे प्राय: ऐसी-ऐसी मांग कर बैठते थे कि महाराज की नींद हराम हो जाती और हर बार गोपाल ही आगे आते उनकी परेशानी दूर करने के लिए। लेकिन महाराज के अन्य दरबारी गोपाल से सलाह-मशविरा करने से रोकते रहते थे। वे केवल यही सोचते रहते कि गोपाल को कैसे महाराज की नजरों में नीचा दिखाया जाए।

इस बार नवाब साहब ने अपने संवाद-वाहक के द्वारा एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था कि आप वैसी चीज भेजें, जो आपके पास है लेकिन मेरे पास नहीं है।

यथावत मंत्रीजी के कहे अनुसार महाराज ने गोपाल को बिना बताए सभा बुलाई पर कोई परिणाम न निकला। अब महाराज ने गोपाल को बुला भेजा। उसके आने पर महाराज ने उसके आगे बात रखी। गोपाल ने सारी बातें सुनी और कुछ सोचने का अभिनय किया। फिर उसने अपने स्वभाव-सिद्ध ढ़ंग से चुटकी बजाते हुए कहा- ''महाराज! चिंता न करें, मैं उन्हें वह चीज पहुँचा दूँगा जिसकी उन्हें आवश्यकता है। आप इसके लिए सुंदर-सी एक डिबिया दीजिए। थोड़ी देर में ही महाराज ने उसे हाथी-दाँत की बनी एक सुंदर-सी डिबिया दिलवा दी। इस पर मंत्री और कई दरबारी गोपाल का मजाक बनाने लगे। वे कहने लगे कि ''भला नवाब साहब को हाथी-दाँत की एक डिबिया की कमी कैसे होगी?'' गोपाल ने कुछ भी नहीं कहा। वह केवल मुस्कुराकर यह कहा कि मैं प्रयत्न करूँगा नवाब साहब को प्रसन्न करने का। आप सबको पहले ही उपहास उड़ाने की आवश्यकता नहीं है।

गोपाल ने डिबिया में थोड़ी-सी राख भर ली और अपनी ज्योतिषियों जैसा भेष बना लिया। फिर वह रवाना हो गए। पहुँचकर यथा-विधि उसने नवाब साहब को सलाम करके दरबार में प्रवेश किया और

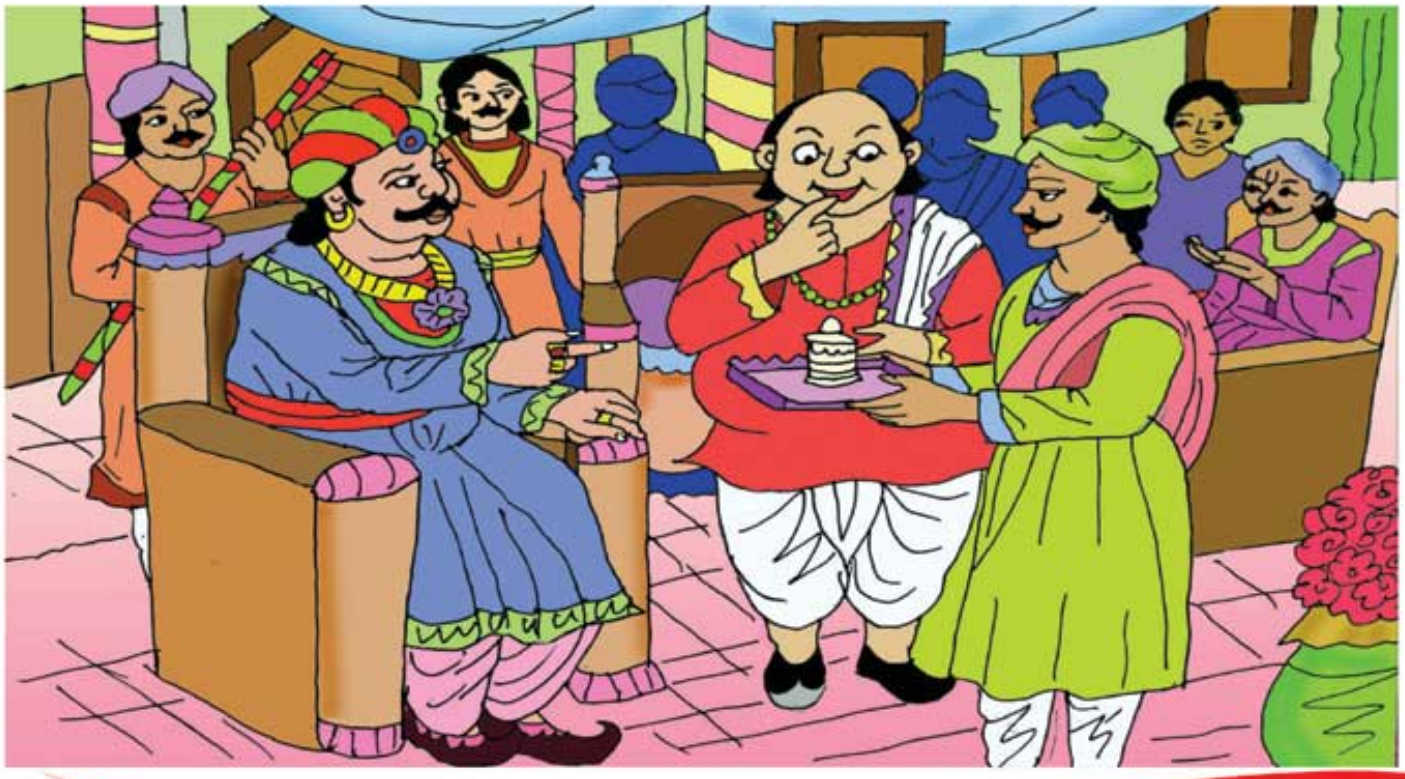

अपने आने का कारण भी बताया। नवाब साहब के धीरज का बाँध टूट रहा था। उन्होंने लगभग धीरज खोकर कहा, ''कहो गोपाल! तुमने वह कौन-सी चीज लाई है, जो मेरे पास नहीं है?''

गोपाल ने भूमिका बाँधते हुए कहा- ''जहाँपनाह! आपके पास वे सारी चीजें हैं जो एक नवाब के पास होनी चाहिए। एक गूढ़ पदार्थ है जो हमारे महाराज छिपाकर रखे हुए हैं, शायद वह चीज आपके पास न हो। इस पदार्थ का उपयोग वे केवल मेरी उपस्थिति में ही करते थे। वह शायद आपके पास न हो।''

नवाब साहब ने बड़े उतावलेपन से कहा कि ''वह अवश्य अपना प्रयोग उनके सामने लाए।'' गोपाल ने अपनी डिबिया निकालकर उससे राख निकाली। अब उसने नवाब साहब के ललाट पर थोड़ी-सी राख मल दी और साथ-ही-साथ स्वयं अपनी ललाट पर भी। अब उसने यह कहा कि ''मैं आसमान में स्वर्ग लोक की अप्सराओं को देख रहा हूँ। आप भी अवश्य देख सकते हैं। यदि आप सज्जन हैं। आपके चरित्र में कोई दाग हो तो आप उन्हें नहीं देख सकते।'' नवाब साहब ने बनावटी खुशी प्रकट करते हुए कहा- ''हाँ गोपाल! मैं भी देख रहा हूँ। क्या नजारा है! सचमुच इसी एक चीज की कमी रह गई थी, जो तुम्हारे महाराज के पास है।''

''मुझे पूरा विश्वास था कि आप अवश्य नजारा देख पाएँगे।'' गोपाल ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा।

अब यदि नवाब साहब गोपाल को झूठा साबित करते हैं तो स्वयं को दरबारियों के सामने नीचा दिखाना होता। इसलिए उन्होंने डिबिया को रखकर उसकी बातों पर हामी भर दी। साथ ही भीतर-ही-भीतर गुस्से को निगलते हुए उन्होंने गोपाल को वाहवाही दी। फिर अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार उसे पुरस्कृत करते हुए विदा कर दिया। गोपाल खुशी-खुशी लौट चला इस आशा के साथ कि अब महाराज भी उसे पुरस्कृत करेंगे।

- गुड़ियाहाटी,
कूचबिहार (पं. बंगाल)

'देवपुत्र' का जुलाई अंक हमें पढ़ने को मिला। आवरण पृष्ठ बहुत पसंद आया। अपनी बात से हमें गुरु पूर्णिमा की बहुत अच्छी जानकारी मिली। इस अंक में बरसात पर सभी कहानियाँ बहुत पसंद आई। कुछ कहानी से वैज्ञानिक खोज की जानकारी मिली पत्रिका पढ़ने से हमें बहुत आनंद मिला। आपसे निवेदन है कि आप चित्रकथा एक लेखक की जगह कई और चित्रकारों को स्थान दें। ताकि दूसरे चित्रकार अपनी चित्रकथा आपको भेज सकें।

आपकी पत्रिका को मैं बहुत वर्षों से पढ़ता आ रहा हूँ। बहुत सारी बाल पत्रिकाएँ बंद हो गईं। किन्तु 'देवपुत्र' का प्रकाशन हो रहा है यह बड़े आनंद की बात है। आज अपने बच्चों को मोबाईल न देकर बाल पत्रिका दीजिए आपका बच्चा बहुत होशियार बन जाएगा और मोबाईल को हाथ नहीं लगाएगा।

- बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'
गोरखपुर (उ. प्र.)

तीन किलोमीटर की दौड़

– रजनीकांत शुक्ल

राजस्थान राज्य हमारे देश में अपने किलों, रंगों और अपनी जीवटता के लिए प्रसिद्ध है। इसकी राजधानी जयपुर जहाँ गुलाबी नगरी के नाम से जानी जाती है, वहीं उदयपुर झीलों की नगरी के रूप में विख्यात है।

इसी राज्य में करौली नाम का जिला है। जहाँ स्थित माता कैला देवी का मंदिर हिन्दुओं की आस्था का प्रतीक है। इसी जिले की हिंडौन तहसील से मात्र तीन किलोमीटर दूरी पर एक छोटा–सा गाँव है जिसका नाम है सिकरोदा जाट। लगभग ड़ेढ़ सौ मकानों वाले इस गाँव की आबादी वर्ष २०११ की जनगणना के अनुसार ड़ेढ़ हजार के लगभग है।

इन्द्रराज मीणा इसी गाँव के रहने वाले हैं। जिनके बेटे कुम्भाराम मीणा ने वर्ष १९९९ में तब अपनी आयु के पंद्रह वर्ष पूरे किए थे। उसका विद्यालय हिंडौन सिटी में था। घर से अपने विद्यालय जाते समय कुम्भाराम को रास्ते में एक रेलवे का ट्रैक पड़ता था। जिससे होकर मुंबई–दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस सहित अनेक ट्रेनें प्रतिदिन गुजरती थीं। इसी के ऊपर से होकर कुम्भाराम मीणा अपने विद्यालय जाते और आते समय गुजरता था।

वह सितम्बर महीने का अंतिम सप्ताह था और उस दिन तारीख थी २७ सितम्बर की। उस दिन भी हमेशा की तरह कुम्भाराम मीणा अपने विद्यालय की ओर जा रहा था। हिंडौन से महावीर जी कस्बे की ओर जाने वाली उस रेलवे लाईन को पार करते समय उसकी निगाह अचानक रेलवे ट्रैक की ओर गई तो उसने पाया कि उस रेलवे उस ट्रैक का कुछ हिस्सा टूटा हुआ है।

उसे लगा कि जल्दबाजी में शायद उसे देखने में धोखा हुआ है। ऐसा कैसे हो सकता है! जल्दी में वह आगे बढ़ चुका था तो एक बार फिर वह पीछे लौटकर आया। अब तो संदेह की कोई संभावना ही नहीं थी। अब... अब क्या किया जाए? इस ट्रैक पर तो बहुत–सी ट्रेनें चलती है। कहीं अभी कोई ट्रेन इस पटरी पर आ गई तो बहुत बड़ी दुर्घटना हो सकती है। जिसे बचाने के लिए उसे जल्दी ही कुछ करना होगा।

उसने अंदाजा लगाया कि किधर वाले स्टेशन पर कम समय में पहले पहुँचा जा सकता है। रोज

आने–जाने के कारण उसे जानकारी थी कि वहाँ से करीब तीन किलोमीटर की दूरी पर महावीर जी स्टेशन की दिशा में रेलवे का एक केबिन बना हुआ है। अगर वहाँ तक किसी तरह से यह सूचना पहुँचा दी जाए तो इस संभावित बड़ी दुर्घटना को टाला जा सकता है।

यह सोचकर उसने बिना कोई देरी किए उस रेलवे केबिन की ओर भागना शुरू कर दिया। उसके मन में लगातार यह विचार आ रहा था कि कहीं उसके सूचना पहुँचाने से पहले ही दोनों ओर में से किसी भी तरफ से कहीं कोई ट्रेन आ गई तो बहुत बड़ा हादसा हो सकता है। मेरा यह छोटा सा प्रयास इस दुर्घटना को बचा सकता है। जैसे–जैसे उसके मन में यह भाव आता जा रहा था उसे कदम गति पकड़ते जा रहे थे।

एक समय तो मानों उसके पैरों में पंख लग गए थे। अपनी पूरी ताकत से वह मंजिल की ओर दौड़ा चला जा रहा था। यद्यपि रास्ते में उसे दो तीन जगह बेतरतीब बिखरे पत्थरों से ठोकर भी लगी। वह लड़खड़ाया भी मगर उसने इसकी चिंता न करते हुए अपनी भागने की गति को धीमा नहीं किया।

वैसे तो जब कभी उसे घर से विद्यालय निकलने में देर हो जाती तो वह डाँट से बचने के लिए भी विद्यालय के लिए तेज दौड़ लगाता था। मगर आज की यह दौड़ उस दौड़ से काफी अलग किस्म की थी। उस समय सीने में उसका दिल धाड़–धाड़ बज रहा था मगर उसे उस समय वह आवाज सुनने की फुर्सत नहीं थी। बस उसकी एक ही तमन्ना थी कि किसी तरह जल्दी से जल्दी वह किसी भी दशा में किसी भी दिशा से आने वाली ट्रेन के आने से पहले उस रेलवे केबिन तक पहुँच जाए।

तीन हजार मीटर की यात्रा करके जब कुम्भाराम मीणा हाँफता हुआ केबिन के पास पहुँचा तो उसने नीचे से ही चिल्लाकर केबिनमैन को आवाज दी। टूटते–फूटते शब्दों में वह बोला– काका! आने वाली गाड़ी रोक दो... ट्रैक पर आने–जाने वाली हर गाड़ी को रुकवा दो क्योंकि अभी–अभी मैं देखकर आ रहा हूँ आगे रेलवे की पटरी टूटी हुई है।''

पहले तो केबिनमैन को उस बच्चे की बात पर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन चूँकि दी गई सूचना बेहद महत्वपूर्ण थी और जिस हालत में दौड़ते हुए कुम्भाराम मीणा ने हाँफते हुए यह बात कही थी। उस पर ध्यान देना केबिनमैन ने आवश्यक समझा। उन्हें पता था कि कुछ ही देर बाद उस ट्रैक पर मुंबई–दिल्ली राजधानी एक्सप्रैस गुजरने वाली थी इसलिए उन्हें जो भी निर्णय लेना था जल्दी लेना था।

केबिनमैन ने तुरन्त महावीर जी स्टेशन के स्टेशन मास्टर से संपर्क किया और उन्हें कुम्भाराम मीणा की दी हुई सूचना दी। अब तक मुंबई–दिल्ली

राजधानी एक्सप्रेस के आने का समय निकट आ गया था। स्टेशन मास्टर ने बताई जगह पर तकनीकी कर्मचारियों को तुरन्त भेजकर सिग्नल को डाउन कर दिया।

कुछ देर बाद जब राजधानी एक्सप्रेस आई तो टूटे ट्रैक से कुछ पहले ही रुक गई। उधर रेलवे कर्मचारियों ने जब वहाँ जाकर देखा तो पाया कि नन्हें कुम्भाराम की दी गई सूचना एकदम सटीक थी। उस टूटे ट्रैक की मरम्मत करने में उन्हें लगभग एक घंटे का समय लग गया। उसके पूरी तरह ठीक होने पर वह ट्रेन वहाँ से रवाना हुई।

कुम्भाराम को बहुत खुशी हुई क्योंकि उसकी की गई मेहनत पूरी तरह सफल हुई थी। न केवल रेलवे के अधिकारियों ने बल्कि अनेक सामाजिक व मीडिया संगठनों ने बहादुर कुम्भाराम की सूझबूझ और साहस की खूब तारीफ की। उसके विद्यालय व कई संस्थाओं द्वारा उसे सम्मानित भी किया गया।

कुम्भाराम का नाम राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए भी भेजा गया। अंतत: चयन समिति ने उसके नाम पर मुहर लगाई और उसे वर्ष २००० के राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। देश के प्रधानमंत्री जी के हाथ से राजधानी दिल्ली में गणतंत्र दिवस २००१ से पूर्व देश के अन्य चुने गए बच्चों के साथ कुम्भाराम को भी राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

२७ सितम्बर १९९९ की उस तीन किलोमीटर की दौड़ ने साहसी कुम्भाराम मीणा को देश की राजधानी के राजपथ पर पहुँचा दिया।

नन्हे मित्रो!

जो अच्छा वो ग्रहण करें, जो गलत उसे फेकेंगे,
हम हैं नए जमाने के योद्धा, नन्हे सेनानी,
चले चलें हम आगे आगे, जो होगा देखेंगे,

– दिल्ली

बौद्धिक क्रीडा

शब्द चित्र

– राजेश गुजर

पालकी

नल

शिकायत

चित्रकथा-

हलवाई जी,मैं कल आपसे दो किलो बरफी लेकर गया था..
तो ?
घर जाकर तोली तो वह डेढ़ किलो ही निकली..
हे भगवान!
..आधा किलो बरफी तुम रास्ते में ही हजम कर गए..?

दादाजी हिंदी अनुरागी

– केशरी प्रसाद पाण्डेय 'बृहद'

दिवाकर, प्रभाकर एक ही विद्यालय के अँग्रेजी माध्यम के छात्र एवं घनिष्ठ मित्र थे। उनकी गहरी मित्रता उनके नाम के अनुकूल थी। यथा नाम–तथा गुण। जैसे दिवाकर, प्रभाकर नाम का एक ही अर्थ होता है वैसे ही दोनों की मित्रता के भी एक ही अर्थ थे। दोनों में एकरूपता थी। चाहे दिवाकर कहो या प्रभाकर अर्थ सूर्य का ही निकलता है ऐसी ही एकरूपता।

इधर कोरोना के चलते लॉक डाऊन एवं सोशल डिस्टेसिंग की वजह से इनका मिलना–जुलना बहुत कम हो पा रहा था। बस मोबाईल पर ही बातचीत और चिटचाट होती और कभी ऑनलाईन की पढ़ाई का हाल–चाल। दोनों ऑनलाईन पढ़ाई में व्यस्त थे।

एक दिन दिवाकर ने प्रभाकर से पूछा ''कैसी चल रही है तुम्हारी ऑनलाईन पढ़ाई?'' प्रभाकर ने निराश होते हुए कहा– ''भाई! चल तो रही है पर कोई–कोई टॉपिक समझ में नहीं आता। कुछ भी कहो पढ़ाई तो क्लासरूम में ही तरीके से होती है। जब टीचर और छात्र आमने–सामने होते हैं।''

दिवाकर ने कहा– ''तुम ठीक कहते हो पढ़ाई का मजा तो कक्षा में ही आता है। पर यह तो वैकल्पिक व्यवस्था है। किसी प्रकार काम चल रहा है।'' वैकल्पिक व्यवस्था जैसा शब्द सुनकर प्रभाकर चौंका, और दिवाकर की ओर ताकने लगा। दिवाकर के पूछने पर कि क्या हो गया, प्रभाकर कहने लगा, ''अरे! तुम्हारे मुख से नया शब्द सुनकर मुझे आश्चर्य हो रहा है।'' प्रभाकर की बात सुनकर दिवाकर ने कहा। यह नया शब्द नहीं है यह हिंदी का शब्द है। हम अँग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के साथ यही विडम्बना है कि हिन्दी के प्रभावशाली शब्दों के प्रयोग से वंचित ही रह जाते हैं। वैकल्पिक व्यवस्था का अर्थ है कि ''टाइम बीईंग अल्टरनेट अरेजमेन्ट।'' इस शब्द की बृहद व्याख्या मुझे मेरे दादाजी ने समझायी थी।

''अच्छा! तो तुम्हारे दादाजी हिन्दी अनुरागी हैं क्या?'' प्रभाकर ने दिवाकर से विनोदपूर्वक कहा था। दिवाकर प्रभाकर से कह रहा था। ''तुमने बेशक सही समझा।'' हमारे दादाजी हिन्दी अनुरागी ही हैं। वे हमेशा हमें हिन्दी के शब्द बताते रहते हैं और जब कभी हम बोलचाल की भाषा में हिन्दी के 'किन्तु' के स्थान पर 'बट' का प्रयोग करते हैं तो वे मुझे बहुत डाँटते भी हैं। उनका कहना है कि तुम लोग अँग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी हिन्दी में बहुत कमजोर होते हो।

हम जब कभी कहते हैं 'बट', दादाजी! यह सही नहीं है तो वे मुझे टोंकते हुए कहते हैं ये क्या

'बट-बट' लगा रखा है। तुम्हारा ये 'बट' हिन्दी के वार्तालाप में 'भात में कंकड़' जैसा अनुभव होता है। वे हमेशा दैनिक वार्तालाप में हिन्दी शब्दों का अधिक से अधिक प्रयोग पर बल देते हैं। तब तो तुम्हारे दादा जी वास्तव में हिन्दी अनुरागी ही हैं।''

''हाँ-हाँ भाई! वे बताते हैं कि उन्होंने अपने सेवाकाल में कार्यालयीन कार्य सर्वदा हिन्दी में ही करते थे। हमेशा अधिक से अधिक हिन्दी में कार्य करने के उपलक्ष्य में उन्हें शासन की तरफ से प्रशस्ति पत्र एक नकद राशि से भी कई बार पुरस्कृत किया गया था। उन्होंने तो हिन्दी साहित्य में बहुत सारी पुस्तकें भी लिखी हैं। बाल साहित्य की पत्रिकाओं में उनकी कविता और कहानियाँ प्रकाशित होती रहती हैं।''

''तो तुमने हमें अभी तक उनकी कोई पुस्तक पढ़ने को क्यों नहीं दी?'' प्रभाकर ने शिकायत के लहजे में कहा।

दिवाकर ने कहा- ''तुम चाहो तो आज ही आकर ले जा सकते हो।'' प्रभाकर उसी दिन दिवाकर से दो बाल साहित्य की पुस्तकें लेकर घर चला गया। प्रभाकर के जाने के बाद दिवाकर के मन में विचार आया कि ''देखो एक प्रभाकर है जो हमारे पास से हिन्दी बाल साहित्य की पुस्तकें ले जाकर पढ़ता है और उससे कुछ सीखने का प्रयास करता है। और एक मैं हूँ। जो दादाजी के बार-बार प्रेरित करने के बाद भी हिन्दी बाल साहित्य की किताबें नहीं पढ़ पाता। कभी शाला की पढ़ाई, तो कभी गृहकार्य का बहाना बनाकर टाल देता हूँ। जबकि घर में पढ़ाई के कमरे के चारों ओर हिन्दी साहित्य ढेर सारी पुस्तकें रखी रहती हैं। घर पर ही उपलब्ध सुविधा की हम कितनी उपेक्षा कर रहे हैं यह ठीक नहीं है।''

दिवाकर ने उसी दिन मन में यह दृढ़ संकल्प लिया कि मनोरंजन के तौर पर ही सही पर अपनी नियमित पढ़ाई के साथ-साथ कुछ समय निकालकर बाल साहित्य की किताबें अवश्य पढ़ा करेगा। इससे न केवल हिन्दी की वर्तनी सुधरेगी बल्कि हमारी हिन्दी भाषा भी सुधरेगी।

हम दादाजी की डाँट खाने से भी बचेंगे। साथ ही हिन्दी के अच्छे-अच्छे शब्दों का प्रयोग करके अपनी मित्र मंडली को भी प्रभावित कर सकेंगे। ऐसा मेरा विश्वास है। फिर क्या था दिवाकर ने उठा ली कलम और लिख दिया-

''होकर के हिन्दी प्रतिभागी,
आशा अभिलाषा है जागी।
शब्द सामर्थ्य बढ़ेगा इससे,
कहते दादा हिन्दी अनुरागी।।

- जबलपुर (म. प्र.)

मोर की सुंदरता

प्रस्तुति
चित्रांकन — राजेश गुजर

कंचन वन में वर्षा के दिनों में मोर का मन नाचने को हुआ।

अपने सुंदर पंखों को फैलाए वह प्रसन्नता से नाच रहा था।

वह गाने भी लगा, लेकिन अधिक देर नहीं गाया।

''मेरी आवाज इतनी बेसुरी और कठोर है।''

और उसकी सारी प्रसन्नता वर्षा के साथ बह गई।

वह बहुत दुखी हुआ... और विचार करने लगा...

''भगवान ने मुझे केवल सुंदरता दी है, मुझे सुरीली आवाज न देकर मेरे साथ अन्याय किया है।''

उसी समय जलदेवी प्रकट हुईं।

''तुम दुःख में क्यों डूबे हो?''

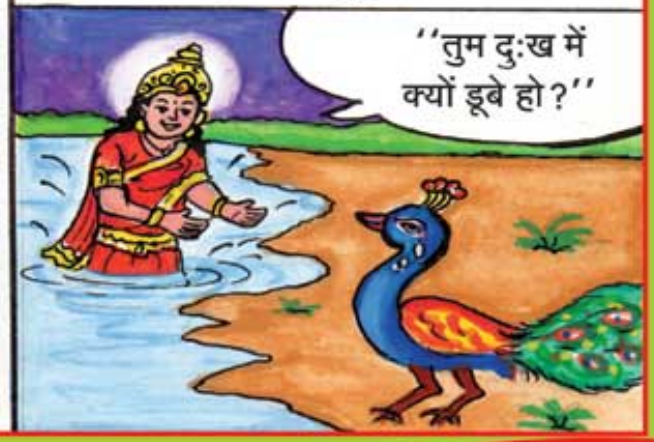

उसने पास के पेड़ पर बुलबुल को गाते देखा और सांत्वना दी।
''भगवान के द्वारा सभी प्राणियों के लिए गुण निर्धारित हैं।''
''उन्होंने तुम्हें सुंदरता दी है, बुलबुल को गाने का गुण दिया है।''
''बाज को उड़ने की शक्ति दी है।''
जो मिला है उसी में प्रसन्न रहने की सीख देकर जलदेवी अदृश्य हो गई।
देवी के शब्दों से वह सोचने लगा– उसने सीखा
''देवी सही कह रही थी, भगवान ने मेरे लिए जो निर्धारित किया है उसी में प्रसन्न रहना चाहिए।''
शिक्षा– आपके पास जितना है उसमें प्रसन्न रहना चाहिए।
समाप्त

हिन्दी को फूल की उपाधि

– नीलू सोनी

''अरे! बहिन अँग्रेजी! कहो, कैसे आना हुआ? आओ–आओ अंदर आओ। बाहर क्यों खड़ी हो? तुम लम्बी यात्रा से आयी हो, थक गई होगी। यहाँ विश्राम करो, मैं अभी जलपान की व्यवस्था करती हूँ।''

सुदूर विदेश से आयी अँग्रेजी को अपनी चौखट पर खड़ा देख, हिन्दी उसका हाथ पकड़कर अंदर ले आयी और प्रसन्नतावश एक ही श्वांस में सब कुछ कह डाला। अतिथि सत्कार तो कोई हिन्दी से सीखे जो अँग्रेजी के आतिथ्य में एक पैर पर नाच गई।

अँग्रेजी का हिन्दी के घर में आना, न केवल हिन्दी के परिवार वालों का, वरन पूरे मोहल्ले के लिए आकर्षण का केन्द्र हो गया था। होता भी क्यों न? अँग्रेजी का गोरा रंग–रूप और उस पर सुनहरे बाल, पाश्चात्य पहनावा और आधुनिकता का चोला कहानी की परियों से कम न था।

मोहल्ले भर के बच्चे तो दिनभर अँग्रेजी मौसी–अँग्रेजी मौसी कहते न थकते थे। अँग्रेजी भी अब उन्हें अपनी सभ्यता के रंग में रंगने लगी थी। अँग्रेजी चार दिनों की मेहमान है, सोचकर हिन्दी भी इस मेल–जोल से प्रसन्न थी।

लेकिन, अब दिन बढ़ने लगे थे, ४ दिन आठ दिनों में, आठ दिन १५ दिनों में बदल गए। न तो अँग्रेजी जाने का नाम ले रही थी और न ही कोई उसे जाने देना चाहता था। बच्चे तो बच्चे अब बड़े और बूढ़ों को भी अँग्रेजी भा रही थी।

किन्तु हिन्दी की चचेरी बहन उर्दू को यह रास न आया, अवसर देखते ही उर्दू बोली– ''हिन्दी बाजी! गुस्ताखी मुआफ, पर गौर फरमाइये अँग्रेजी का यह मिजाज हमें गवारा नहीं है। इसके लफ्जों और तहजीब से हमारी कौम की जुबान और सलीका बिगड़ रहा है। आखिर कब होगी इनकी रवानगी?''

हिन्दी मन की साफ थी, उसने उर्दू की बातों को छोटी की नासमझी मान कर टालते हुए कहा– ''छोटी! ये सब चलता रहता है, तुम चिंता मत करो। अँग्रेजी के जाते ही हमारा समाज फिर पहले जैसा ही व्यवहार करेगा। फिर हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता इतनी कमजोर नहीं है, जो इतनी जल्दी क्षतिग्रस्त हो जाये।'' ''पर बाजी!'' उर्दू को रोकते हुए हिन्दी बोली, ''पर–वर कुछ नहीं, तुम चलो मेरे साथ, हमें अँग्रेजी को देश–भ्रमण भी तो कराना है।''

अँग्रेजी देश–भ्रमण पर क्या निकली, हर क्षेत्र में अपना विदेशी चोला बाँटती चली गई। जिसे हिन्दी, अँग्रेजी की दिलदारी समझ रही थी वास्तव में वह अँग्रेजी की कूटनीति थी।

घर लौटकर हिन्दी ने सबके व्यवहार में परिवर्तन पाया। न कोई चरण स्पर्श, न कोई प्रणाम। सब बस ''हेलो'' ''हाय'', ''हाउ डू यू डू'' का जाप कर रहे थे।

बदलते माहौल और गिरते हालात में, दिनों–दिन हिन्दी स्वयं को बेबस और लाचार अनुभव कर रही थी।

सारे घर में अँग्रेजी का वर्चस्व हो गया था और शासन भी उसी का चल रहा था। हद तो तब हुई जब अँग्रेजी के साथ मिलकर उसके अपनों ने ही उसे 'फूल' की उपाधि देते हुए चौखट पर ला खड़ा किया, ''हिन्दी! यू ब्लडी फूल, गेट आउट फ्रॉम दिस हाउस।''

आज हिन्दी का घर, 'हाउस' हो चुका था। लाचार फूल–सी कोमल हिन्दी, जो अपने मकरंद से सारे परिवेश को सुगंधित करती थी, आज अपनी ही चौखट के किसी कोने पर 'फूल' की उपाधि लिए मुरझाई–सी खड़ी थी, पर यह उपाधि हिन्दी को हिन्दी के फूल का नहीं वरन अँग्रेजी वाले फूल की मिली थी।

– धनपुरी (म. प्र.)

थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी (६)

दीनू ने निगल ली काँच की गोटी

– डॉ. मनोहर भण्डारी

एक दिन गाँव के चार पाँच लड़के काँच की गोटियाँ खेल रहे थे। खेल बहुत देर से जम रहा था। खेल–खेल में लड़के दीनू ने एक गोटी मुँह में रख ली। गोटी अचानक पेट में चली गई।

यह बात इसने दूसरे लड़कों को बताई। उनका खेल वहीं रुक गया। सब लड़के दीनू के साथ उसके घर गए।

लड़कों ने यह बात दीनू की माँ को बताई। दीनू की माँ बहुत घबरा गई। एक दो बालक रामू को खबर करने चले गए। राह में मोहन मिल गया।

मोहन ने सारी बात सुनी। मोहन ने कहा– ''घबराने की कोई बात नहीं है। उसे केले या हलवा खिलाओ। किसी प्रकार की दवा देने की आवश्यकता नहीं है। साधारण खाना भी खिलाना है। शौच के लिए जाए तो निगरानी रखो। एक दो दिन में गोटी निकल जाएगी।''

दीनू की माँ ने पूछा– ''इसे जुलाब दे तो गोटी निकल जाएगी?''

मोहन ने कहा– ''जुलाब देने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह तो ठीक रहा कि इसने गोटी ही निगली। यदि पिन या तीखी चीज निगल जाता तो इसी समय शहर ले जाना पड़ता। तीखी चीजों से आंतड़ियों के कटने–फटने का डर रहता है।''

दूसरे दिन दीनू की माँ मोहन से मिली। उसने बताया कि– ''गोटी शौच में निकल गई।''

– इन्दौर (म. प्र.)

अभी नहीं

– दिनेशप्रताप सिंह 'चित्रेश'

एक बार की बात है पिंकी लोमड़ी टहलती हुई भीकू लोमड़ के साथ किसी गाँव के पास पहुँच गयी। भीकू तो पहले भी गाँव की तरफ आ चुका था, लेकिन पिंकी उस दिन पहली बार गाँव देख रही थी। यहाँ बने छोटे–छोटे घर उसे बड़े सुन्दर व आरामदायक लग रहे थे।

वह सोचने लगी कि घर भी क्या मजेदार चीज होती है। यदि थोड़ी मेहनत करके हम भी जंगल में अपना एक छोटा–सा मकान बना लें तो बस मजा ही आ जाए। न बरसात में भीगना पड़े और न सर्दियों में ठिठुरना पड़े। गर्मी की लू भरी दोपहर भी, एक कमरे में बैठे–बैठे कितने मजे में बिताई जा सकती है।

अभी पिंकी इस विषय में भीकू से कुछ कहना ही चाहती थी कि वह बोल उठा, ''पिंकी! देखो, अब शाम होने लगी है और आसमान में बादल छा रहे हैं। जल्दी से जल्दी अपने बसेरे की ओर चल देना चाहिए।''

पिंकी ने आसमान की ओर देखा, वहाँ ढेर सारे काले–भूरे बादल एकत्र हो रहे थे। वह तत्काल भीकू के साथ जंगल की ओर चल पड़ी। वे दोनों थोड़ी ही देर बाद जंगल के अन्दर अपने बसेरे के निकट पहुँच गये। अब आकाश में बादल गहरा चुके थे और हल्की बूँदा–बाँदी भी शुरू हो गयी थी। मौसम का रंग देखकर लगता था कि जमकर बरसात होने वाली है। ऐसी दशा में जिस घनी झाड़ी के अन्दर उनका बसेरा था, उसमें छिपना बेकार था। दोनों एक ऐसा स्थान खोजने लगे, जहाँ बैठकर भीगने से बचा जा सके। किन्तु घने अँधेरे के कारण से उनको ऐसा कोई स्थान नहीं मिल सका। तभी जोरों से बादल गड़गड़ा उठे और बरसात तेज हो गई।

भीकू दौड़कर एक घने छतनार पेड़ के नीचे बैठ गया। पिंकी लोमड़ी भी जाकर वहीं बैठ गई। इस तरह वे थोड़ी देर भीगने से बचे रहे, किन्तु वर्षा बहुत तेज थी। धीरे–धीरे पत्तियों के बीच से छनकर पानी टपकने लगा। वे दोनों भीगने लगे। अचानक बिजली चमक उठी। सारा जंगल प्रकाश से नहा गया। इसी बीच पिंकी की दृष्टि सामने वाले पेड़ पर पड़ी। पेड़ का मोटा तना खोखला था। वह दौड़कर तने के अन्दर बैठ गई। भीकू भी वहीं जा बैठा। भीकू और पिंकी उस खोखले में पानी से सुरक्षित थे। पिंकी ने कहा– ''जिनके पास घर हैं, वे आराम से सो रहे होंगे।''

''यह तो है ही।'' भीकू ने हाँ में हाँ मिलाई।

''चलो, हम भी अपना घर बना लें।'' पिंकी ने सुझाव दिया।

भीकू ने कहा– ''ठीक है, बना लेंगे।''

सुबह मौसम साफ था। चमकीली धूप निकली

हुई थी। पिंकी बोली– ''चलो, आज से ही घर बनाना शुरू कर दें।''

भीकू ने समझाया, ''घर कोई एक दिन में तैयार कर लेने की वस्तु तो है नहीं। मान लो अभी हम घर बनाना प्रारम्भ कर दें और शाम को बरसात होने लगे तो? सब चौपट हो जाएगा न? इसलिए अभी नहीं, बरसात समाप्त हो जाने दो, तब घर बनाना आरम्भ करेंगे।''

दोनों ने बरसात उसी पेड़ के खोखले तने में बिताई। सर्दी का मौसम आ गया। पिंकी लोमड़ी ने पहाड़ में एक छोटी–सी खोह की खोज कर ली थी। उसी में वह भीकू के साथ रहती थी लेकिन ठंड से छुटकारा नहीं मिला था। रात में दोनों खोह में पड़े–पड़े ठिठुर जाते। कभी ओले गिरते या बरसात होती तो हालत और भी खराब हो जाती। पिंकी सोचती अगर मेरे पास छोटा–सा भी घर होता तो यह ठंड क्यों झेलनी पड़ती?

पिंकी ने भीकू लोमड़ को घर बनाने की फिर याद दिलाई। वह बोला– ''घर बनकर पूरा होने में दो–तीन महीने का समय लगता है। यदि हम आज से घर बनाना शुरू कर दें तब भी यह सर्दी हमें ठिठुरते हुए व्यतीत करनी होगी। फिर जल्दी करने का क्या लाभ है? सर्दी का मौसम समाप्त हो जाने दो, फिर आराम से घर बनाना प्रारम्भ करेंगे।''

पिंकी लोमड़ी सर्दी समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगी। सर्दी के बाद जब गर्मी का मौसम आया तो उन दोनों की रातें आसमान के नीचे और दिन पेड़ की छाँव में आराम से बीतने लगे। हाँ, जब लू चलती तो किसी बन्द जगह की तलाश करनी पड़ती। ऐसे में पिंकी को घर बनाने की याद आ जाती।

एक दिन लू भरी दोपहरी में पिंकी और भीकू एक झाड़ी के अन्दर बैठे थे। पिंकी बोली, ''भीकू तुमने गर्मी में घर बनाने के लिए कहा था। चलो, आज से ही काम प्रारम्भ कर दिया जाए, वरना दिन बीतते देर नहीं लगती। दो तीन माह बाद वर्षा ऋतु आ जाएगी, उसके बाद सर्दी...।''

''पिंकी! तुम्हारी बात ठीक है।'' भीकू बीच में बोल उठा, ''किन्तु देखो, तालाब, पोखर सब सूखे पड़े हैं। बिना पानी के गारा कैसे तैयार होगा? बिना गारे के घर नहीं बन सकता। इसलिए अभी नहीं। कुछ दिन और प्रतीक्षा करो, एक दो बार पानी बरस जाने दो, तब घर बनाना प्रारम्भ करेंगे।''

देखते–देखते गर्मी का मौसम बीत गया। बरसात आ पहुँची। पुन: घर बनाने की बात चली तो भीकू लोमड़ ने पानी बरस जाने पर अधूरा बना घर ढह जाने की समस्या सामने रख दी। एक के बाद दूसरा मौसम आता गया, लेकिन भीकू हर बार पुरानी समस्या दोहराता रहा। वर्ष पर वर्ष व्यतीत होते गये। अनुकूल समय की प्रतीक्षा होती रही और पिंकी लोमड़ी का घर बनाने का सपना अधूरा रहा गया।

– जासापारा, सुलतानपुर (उ. प्र.)

चुटकुलें

छः अंगुल मुस्कान

सास– मुन्ना कब से रो रहा है। इसे लोरी सुनाकर सुला क्यों नहीं देती ?

बहू– लोरी सुनाती हूँ तो पड़ोसी कहते हैं, कि भाभीजी! इससे अच्छा तो मुन्ने को ही रोने दो।

*****

पत्नी रसगुल्ले खा रही थी।

पति– मुझे भी चखाओ।

(पत्नी ने एक रसगुल्ला दे दिया।)

पति– बस एक।

पत्नी– हाँ, बाकी सबका भी स्वाद ऐसा ही है।

*****

मेरी दुकान वाले से लड़ाई हो गई थी, वह बेईमानी कर रहा था, जूस के पैकेट पर लिखा था शूगर फ्री और वह मुफ्त चीनी देने का नाम नहीं ले रहा था।

*****

शिक्षक (छात्र से)– अपने देश में लोगों की मृत्यु दर क्या है ?

छात्र– शत प्रतिशत है जी।

शिक्षक– वह कैसे ?

छात्र– जो जन्म लेता है, वह मरता भी है।

*****

शिक्षक (बच्चों से)– आम तोड़ने का सबसे अच्छा समय कौन–सा है ?

सन्नी– जी, जब माली बाग में न हो।

*****

अध्यापक ने कक्षा में पूछा– 'एकालाप' किसे कहते हैं ?

एक छात्र ने बताया– 'पति–पत्नी' के संवाद को श्रीमान जी! क्योंकि उस समय केवल पत्नी ही बोलती है।

कविता

आलू भैया

– डॉ. लता अग्रवाल

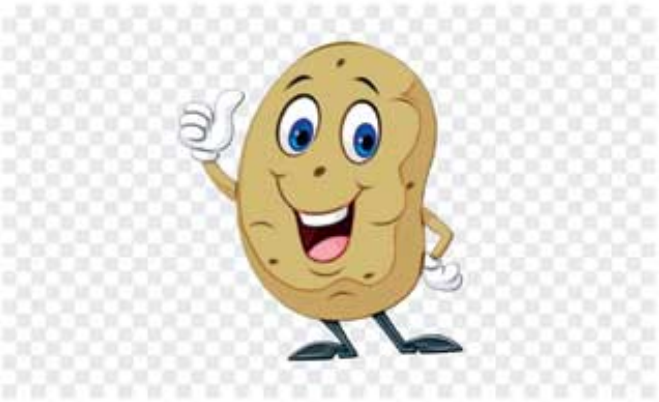

आलू भैया! बोलो कैसे,
तुम सबमें मिल जाते हो ?
मैथी, गोभी, बटले, बैंगन,
सबका स्वाद बढ़ाते हो।।
आटे के संग मिलते जब,
स्वादिष्ट पराठे बन जाते।
तुम सांभर में, तुम डोसे में,
कुरकुरे, चिप्स में मन भाते।।
सेंव, समोसे, कभी कचौरी,
आलू बड़े निराली बात।
छोले, टिक्की–चाट, पकौड़े,
चटखारों की है बारात।।
पूरी संग सूखी तरकारी,
सब्जी तरीदार यम–यम।
कितने सबमें घुल मिल जाते,
आलू भाई! तुम हरदम।।
नमकीनों से मुँह जले तो,
हलुवा भी बन जाते हो।
हम भी हिल–मिल रहे सभी से,
सीख यही सिखलाते हो।।

– भोपाल (म. प्र.)

खेलो खेल

क्या तुममें से कोई डोरी को डोरी के बीच से निकाल कर एक बार में दो गांठें बना सकता है?

नहीं तो चित्रानुसार हाथ पर डोरी लटकाओ फिर अगले चित्रानुसार एक सिरे को पहली दो अंगुलियों के बीच पकड़कर उस अंगुली के सहारे

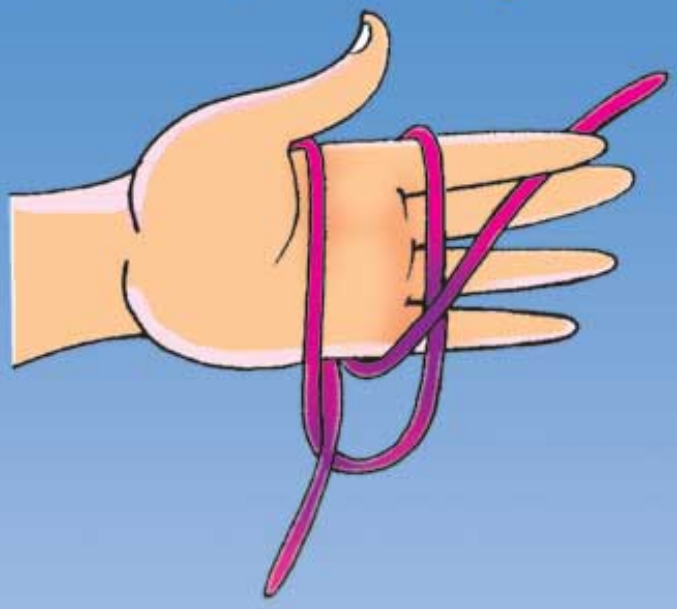

..डोरी झटका देकर गिराओ, दो गांठें लग जाएंगी.

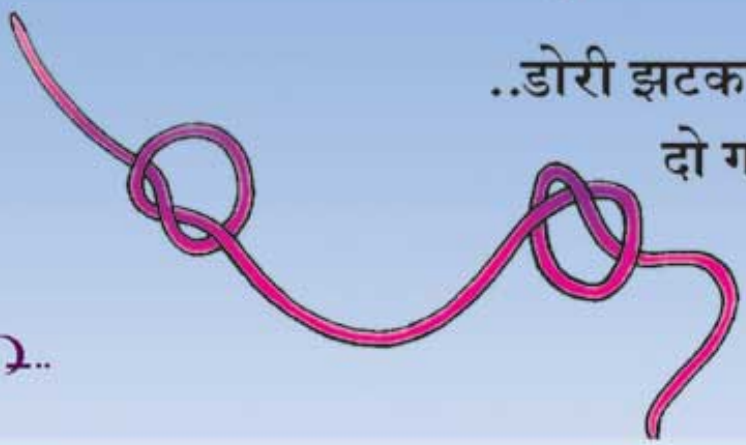

पुस्तक परिचय

डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल बाल साहित्य जगत के विविध विधाओं में, बालसाहित्य सृजन एवं संपादन के सुप्रसिद्ध सशक्त हस्ताक्षर हैं। इस बार उनकी लिखी दो महत्वपूर्ण बाल कहानियों की पुस्तकें आपके लिए प्रकाशित की हैं के. एल. पचौरी प्रकाशन, डी–८ इन्द्रापुरी, लोनी, गाजियाबाद–०२ (उ. प्र.) ने। प्रत्येक पुस्तक में २५–२५ बाल कहानियाँ हैं जिनमें शिक्षा, दिशा, संस्कार, प्रेरणा, संस्कृति–प्रेम जैसे व्यक्तित्व निर्माण एवं श्रेष्ठ मानव बनाने के तत्व तो हैं पर इतने सरल सुबोध व सरलता से रोचक कहानियों में ऐसे पिरोए गए हैं कि वे जीवन में उतारे जाते हैं, पर मनोरंजक रुचिपूर्ण तरीके से। पुस्तकें हैं–

दादी का बेंत

मूल्य २००/–

सुनहरे पंख

मूल्य २००/–

कहानियों का पिटारा

मूल्य २२५/–

प्रकाशक– ग्रन्थ विकास

सी–३७, बर्फखाना, राजापार्क,

जयपुर (राजस्थान)

डॉ. अलका अग्रवाल समकालीन बाल कहानीकारों में एक प्रमुख नाम है। बच्चों के लिए आपकी कलम से निरंतर सृजन होता रहता है और वे रचनाएँ बच्चों के मन में रच–बस जाती हैं। प्रस्तुत है एक ऐसी ही पुस्तक, २१ कहानियों वाली।

सपनों की उम्र

मूल्य १३०/–

प्रकाशक– वानिका प्रकाशन

बी–१४, आर्यनगर, नई बस्ती

बिजनौर–२४६७०१ (उ. प्र.)

श्रीमती पवित्रा अग्रवाल हिन्दी बाल साहित्य संसार की वरिष्ठ एवं सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं। विशेषत: बाल कहानी लेखन में आपको महारत प्राप्त है। प्रस्तुत है किशोर होते बच्चों के लिए उनकी चुनिंदा २० बाल कहानियाँ इस पुस्तक में।

भोला की भोलागिरी

मूल्य १५०/–

प्रकाशक– अद्रिक पब्लिकेशन

४१, हसनपुर आई. पी. एक्सटेंशन

पटपड़गंज दिल्ली–९२

श्री समीर गांगुली नए प्रयोगों एवं अनूठी कल्पना के साथ रोचक चित्रण के सिद्धहस्त रचनाकार हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आपने एक ही बाल चरित्र के २० रोचक किस्सों को लिया है। एक पात्र की अनेक कहानी कह लें या बातें, लेकिन हर घटना मनोरंजन, बोधक, आनंद देने वाली है इस पुस्तक की।

कविता

धूप धरा पर

– धीरेन्द्र द्विवेदी

चिड़ियाँ पढ़ने लगीं ककहरा, कुत्ते सोये, छोड़ा पहरा।
गिलहरियाँ भी झटपट जागीं, जल्दी-जल्दी धोया चेहरा।।
चरागाह में लगी कचहरी। बन बैठे सब भूप धरा पर।।
बिखरी बिखरी धूप धरा पर। निखरा सबका रूप धरा पर।।

पर बंदर अलसाया-सा था, मुँह थोड़ा लटकाया-सा था।
भूखे-भूखे रात कटी थी, चूहों ने भटकाया-सा था।।
बिल्ला सुबह-सुबह था बैठा। बनकर के बहुरूप धरा पर।।
बिखरी बिखरी धूप धरा पर। निखरा सबका रूप धरा पर।।

तितली खुश हो डोल रही थी, पुष्प-पुष्प से बोल रही थी।
हँसना गाना ही जीवन है, राज यही तो खोल रही थी।।
आशाओं से पगे प्रात में, रहना बन अनुरूप धरा पर।।
बिखरी बिखरी धूप धरा पर। निखरा सबका रूप धरा पर।।

– बभनियाँव, देवरिया (उ. प्र.)

बलिदान दिवस १३ सितंबर

यतीन्द्रनाथ दास

आपने कोलकाता के विद्यासागर कॉलेज से बी. ए. की परीक्षा पास करने के बाद आजादी के आंदोलन में भाग लेना प्रारंभ किया। आपको पहली बार पकड़े जाने पर ६ माह का कारावास हुआ।

मैमनसिंह केंद्रीय कारागार में जब आपने देखा कि राजनीतिक कैदियों पर बहुत अत्याचार होते हैं, तो आपने वहाँ भूख हड़ताल प्रारंभ कर दी। हड़ताल पूरे बीस दिनों तक चली। अंत में जेल अधीक्षक ने आपसे क्षमा माँगी, तब इनकी हड़ताल समाप्त हुई।

बाद में आप सशस्त्र क्रांति में विश्वास करने वाले लोगों के संपर्क में आए और विस्फोटक पदार्थ बनाने की ओर लग गए।

लाहौर षडयंत्र में आपको भी पकड़ लिया गया। जब जेल पहुँचे तो राजनीतिक कैदियों पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध आप भूख हड़ताल पर बैठ गए।

पूरे ६२ दिनों की भूख हड़ताल के बाद १३ सितंबर १९२९ को लाहौर के वार्सताल कारागार में ही आपका निधन हो गया। उस समय आप मात्र २५ वर्ष के थे।

–

जन्मदिवस : २८ सितंबर

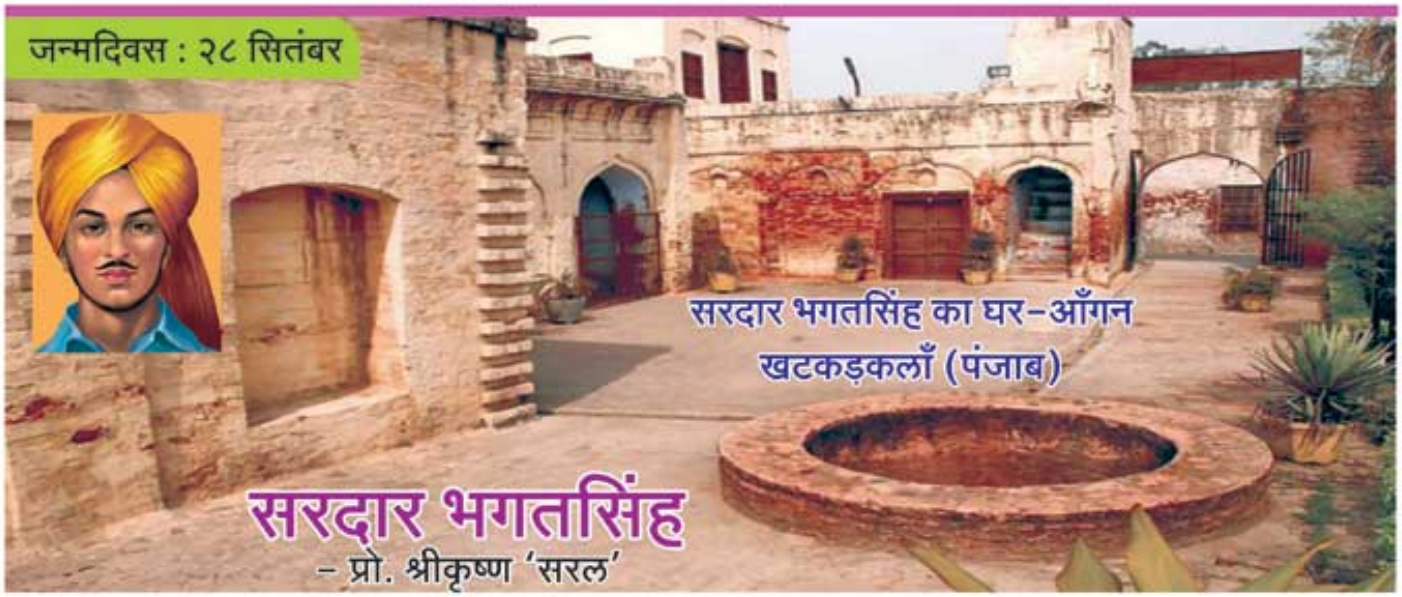

सरदार भगतसिंह

– प्रो. श्रीकृष्ण 'सरल'

वह भगतसिंह था लालाजी की हत्या का
दिन-दोपहरी, बदला भरपूर चुकाया था।
सॉन्डर्स अधम को भून गोलियों से डाला
भारत का गौरव ऊँचा और उठाया था।।
वह भगतसिंह था, दिल्ली की असेम्बली में
बम के गोलों से जिसने किया धड़ाका था।
बहरे कानों के पर्दे उसने खोले थे
अँग्रेजों के यश पर ही डाला डाका था।।
वह भगतसिंह था, खुद बन्दी बन कर जिसने
अँग्रेज हुकूमत को पटकनी खिलाई थी।
झूठे प्रचार का उसने पर्दा-फाश किया
जो बुझ न सकी, उसने वह आग लगाई थी।।
वह भगतसिंह था, फाँसी का वर पाकर वो
अपने निश्चय से किसी भाँति भी नहीं टला।
नेहरू-सुभाष, श्री महामना को भी टाला
जब मृत्यु-वरण करने के लिए वीर मचला।।

– उज्जैन (म. प्र.)

कविता : शिक्षक दिवस

शिक्षक

– सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा'

अक्षर–ज्ञान हमें देते जो
वही नहीं बस होते शिक्षक,
होते शिक्षक मात–पिता भी
जो हैं जीवन के अभिरक्षक।

जो जीवन में राह दिखाए
हैं वे सब ही शिक्षक अपने,
शिक्षक वे भी, जगा रहे जो
बन्द पलक में सोये सपने।

हर घटना वह होती शिक्षक
सीख हमें जो देकर जाती,
ठोकर भी तो बनकर शिक्षक
उचित मार्ग हमको बतलाती।

अनुभव भी शिक्षक ही होते
जो गलती से हमें बचाते,
इनका लाभ उठाएँ हम तो
कटे शेष जीवन मुस्काते।

नई दिशा जिनसे मिलती हो
उन सबको हम शिक्षक मानें,
धवल रोशनी में इनकी हम
सच्चा पथ जीवन का जानें।

शिक्षा देने वाले शिक्षक
होते हैं जीवन–निर्माता,
बना रहे हम सबका इनसे
सदा–सदा श्रद्धा का नाता।

– कोटा (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०८/२०२२ | प्रेषण तिथि ३०/०८/२०२२ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार रहेगा।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना